THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_178304
UNIVERSAL LIBRARY

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 891.431 V28 A. Accession No. H 1930

Author वर्मा, धीरेन्द्र

Title अधूराय

This book should be returned on or before the date last marked be

श्रीगोकुलनाथ कृत

अष्टछाप

संकलनकर्ता

धीरेन्द्र वर्म्मा एम० ए०

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,

विश्वविद्यालय, प्रयाग,

प्रकाशक

रामनरायन लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

इलाहाबाद

१९२९

प्रथम संस्करण १०००] [मूल्य १)

सूची

—: o :—

	वक्तव्य	...	...	१—३
१.	सूरदास	...	...	... १
२.	कृष्णदास	...	...	... १९
३.	परमानंददास	...	...	... ४५
४.	कुंभनदास	...	...	... ७०
५.	नंददास	...	...	... ९४
६.	चतुर्भुजदास	...	...	... १०४
७.	छीतस्वामी	...	...	... ११३
८.	गोविंद स्वामी	...	...	... ११९

वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित '८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियों की जीवनियों का संग्रहमात्र है। '८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों का वर्णन है। सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, तथा कुंभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त में एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाईं विट्ठलनाथ के सेवकों का वर्णन २५२ वार्ता में मिलता है। गुसाईं जी के सेवकों में नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविंद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियां २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठल नाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवकों को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अतः प्रस्तुत संग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा सांप्रदायिक परम्परा है।

इस संग्रह को हिन्दी जनता के सन्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा संबंधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के व्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक उद्देश है सूरदास आदि कुछ प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की जीवनियों

के इन प्रायः समकालीन जीते जागते वर्णनों से हिन्दी प्रेमियों का घनिष्ट परिचय कराना। ८४ तथा २५२ वार्ताओं के अच्छे संस्करण न होने तथा इन ग्रंथों के बहुत बड़े होने के कारण उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति नहीं हो पा रही थी। इसके अतिरिक्त यह जीवनियाँ देश की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। राष्ट्रीय जीवन के इन आवश्यक अंगों का सच्चा इतिहास लिखने के लिये हिन्दी साहित्य में कितना भंडार भरा पड़ा है इसका दिग्दर्शन इस छोटे से संग्रह को आद्योपान्त पढ़ने से भली प्रकार हो सकेगा। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अध्ययन अभी किया ही नहीं गया है।

इस संग्रह के मूल का आधार डाकोर से प्रकाशित ८४ तथा २५२ वार्ताओं के संवत् १९६० के संस्करण हैं। ८४ वार्ता का डाकोर से एक नया संस्करण निकला है किन्तु इसके तथा पुराने संस्करण के मूल में विशेष अन्तर नहीं है। ८४ वार्ता का मथुरा से प्रकाशित संवत् १९४० का लिथो का छपा एक दूसरा संस्करण देखने को मिल गया था। इस संस्करण से कुछ महत्वपूर्ण पाठ-भेद फुटनोट में दे दिये हैं। २५२ वार्ता का न कोई अन्य संस्करण ही मिल सका और न हस्तलिखित प्रति ही अतः अन्तिम चार जीवनियों में पाठान्तर नहीं दिये जा सके हैं। पर्याप्त हस्त लिखित प्रतियें अथवा छपे हुये संस्करणों के बिना किसी ग्रंथ के मूल को

"शुद्ध करने" अथवा "संपादन करने" में मुझे विश्वास नहीं है अतः इस ओर प्रयास ही नहीं किया गया है।

इस बड़ी त्रुटि के रहते हुये भी प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन से उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति में बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी इसी धारणा से हिन्दी जनता के सामने यह अपूर्ण पुस्तक रक्खी जा रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि विद्यार्थी वर्ग तथा हिन्दी जनता दोनों ही इस संग्रह को रुचिकर तथा हितकर पावेंगे।

१—१—१९२९

धीरेन्द्र वर्म्मा।

अष्टछाप

अथ[1] सूरदास जी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता

—:o:—

प्रसंग १

सेा एक समय[2] श्रीआचार्य जी महाप्रभू अडेलते[3] व्रज कों[4] पावधारे[5]। सेा कितनेक दिन में गऊघाट आये[6]। सेा गऊघाट आगरे और मथुरा के बीचोंबीच[7] है तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू पावधारे। सेा गऊघाट ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभू उतरे। तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप स्नान करिके संध्यावंदन करिके पाक करन को बैठे[8] और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन को समाज बहुत[9] हुतो और सेवकहू अपने अपने ठाकुर जी को[10] रसोई करन लागे।

सेा गऊघाट ऊपर सूरदास जी कौ स्थल हुतो[11]। सेा सूरदास

---

१ अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक। २ समें। ३ अंडेलते। ४ व्रज कों। ५ पाउं धारे। ६ आये। ७ वीचा वीच। ८ बैठे। ९ बहुत। १० श्रीठाकुर जी को। ११ हुतो।

जी स्वामी हैं आप सेवक करते। सूरदास जी भगवदीय हैं[1] गान बहुत आछौ[2] करते ताते बहुत[3] लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे। सेा सूरदास जी के सेवक देखि के सूरदास जी सेां जाय कही जेा आज श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिण में दिग्विजय कीयेा है तब[4] पंडितन को जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कोयौ है सेा श्रीवल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं। तब सूरदास जी ने अपने सेवक सेां कह्यौ जेा तू जाय के दूर बैठि जब आप भोजन करिकें बिराजे तब खबरि करियेा हम श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को जायँगे। सेा वह तनक दूर जाय बैठौ।

तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते। सेा पाक सिद्ध भयेा। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने श्रीठाकुर जी को भेाग समर्प्यो। पाछे समयानुसार भेागसराय अनेासरि करिकें महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे। तहाँ सब सेवकहू पहुँचिकें श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आसपास आय बैठे। तब वह सूरदास जी को सेवक आयेा सेा सूरदास जी सेां कही जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थलते आयकै श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जेा सूर आवेां बैठौ। तब सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करि कै आगे आय बैठे। तब श्रीआचार्य जी

१ दे। २ आछो। ३ बहुत। ४ सब।

महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद जस वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने कही जो आज्ञा[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग धनाश्री

हौं हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबर मेरी इतने मान कौं लायक॥ १॥
जो तुम अजामेलि सों कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलौ जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ॥ २॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कौऊ आयजुरे इक ठौर।
अब के इतने आन मिलाऊँ बेर दूसरी और॥ ३॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हौं यही हमारी भेट॥ ४॥
ऐसी कितनी कब नाऊँ[5] प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ।
अबकी बेर निवार लेउ प्रभू सूर पतित कों ठाडौ॥ ५॥

और पद गायौ।

राग धनाश्री

प्रभु में सब पतितन को टीकौ।
और पतित सब धौस चारिके में तौ जन्मत ही कौ॥ १॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ।
मोहि छांडि तुम और उधारै मिटै शूल केसें जीकौ॥ २॥

---

१ आज्ञा। २ विस्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक बताऊँ।

कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेचि कहत हौं लीकौ।
मरियत लाज सूरपतितन में कहत सघन में नीकौ॥ ३॥

ऐसौ पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर है कें ऐसो घिघियात काहे कौ है कछू भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हौं तो समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे[1]। तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी कों नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भयें। ताते सूरदास जी कौ नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तब सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका ते संपूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानियें सो दसमस्कंध की सुबोधिनी में मंगलाचरण कौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सो श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीलात्तराबिध सायनम्[2]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्॥ १॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीयै। सो पद। रागविलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम बियोग।" यह पद संपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सो यह पद

१ समझायेंगे। २ लीलाक्षराब्धि सायिनं।

दशमस्कंध के मंगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयौ। सेा यामें कह्यौ है जेा तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीये ताते जानी जेा सूरदास को सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यौ जेा लीला को अभ्यास भयौ। पाछें सूरदास जी ने नंदमहोत्सव कीयौ। सेा श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायौ। राग देवगन्धार। 'ब्रज भयौ महर के पूत। जब यह बात सुनी।" सेा यह श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे गायौ। सेा सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये और अपने श्रीमुख ते कहैं जेा सूरदास मानेां निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीये हुते तिन सबन को नाम दिवायौ। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी कों पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई। पाछें जेा पद कीये सेा श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादश स्कंधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा-पात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन बिराजे। पाछें फेरि ब्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ ब्रज को आये।

प्रसंग २

अब जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू ब्रजकों पधारे सेा प्रथम

श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जेा सूरदास श्रीगोकुल कों दर्शन करौ। सेा सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सेा दंडवतमात्र श्रीगोकुल की बाल-लीला सूरदास जी के हृदय में फुरी और सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगेाकुल की बाललीला स्फुर्दना भई। तब सूरदास जी ने विचारयौ मन में जेा श्रीगेाकुल की बाललीला कौ वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्रीगेाकुल की बाललीला को पद गायौ। सेा पद।

रागबिलावल

सेा नित करन पुनीत लियै।[1]
घुटुरुवन चलत, रेणुतन मेड़त,[2] सुरत वेष कियै[3] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छबि गेारेाचन कौ तिलक दियै।
लार लटकन मानेा मत[4] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कटुला कंठ बजत, केहरि नख राजत है सखी रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ जीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सेा सुनि के आप बहुत प्रसन्न भये। पाछें और हू पद गायौ।

---

१ सेाभित कर नवनीत लिये। २ मंडित। ३ सुख लेप किये। ४ मत्त।

तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन में बिचारे जेा श्रीनाथ जी के यहाँ और तेा सब सेवा कौ मंडान भयौ और कीर्तन कौ मंडान नाही कियौ है ताते अब सूरदास जी को दीजियै। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सेा सूरदास जी कौ साथ लीये ही सेा श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मंदिर में पधारे। तब सूरदास जी सें कह्यौ जेा सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयौ। तब आपने कह्यौ जेा सूरदास कछू श्रीनाथ जी कों सुनावौ। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्त[1] को पद गायौ। सेा पद। राग धनाश्री। "अब हौं नाच्यौ बहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायौ। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जेा अब तौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तेा प्रभून ने दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसेा जस करिकें गाय सुनायौ। सेा पद। राग गौरी। "कोन सुकृत इन व्रजवासिन कों।" यह पद सम्पूर्ण करिके गायौ। सेा सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये।

सेा जेसेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कीयौ है ताके अनुसार सूरदास जो ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ़ स्नेह की यौ[2] परमकाष्ठा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

१ विज्ञप्ति। २ तौ।

ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन में पूतना करि, सकट तृनावर्त करि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने बहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ व्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत हो जाय।

प्रसंग ३

और सूरदास जी ने सहस्रावधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहिये सो सब जगत में प्रसिद्ध भये। सो सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सो सुनिकें यह बिचारी जो सूरदास जी काहू बिधि सों मिले तो भलौ। सो भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यौ देशाधिपति ने जो सूरदास जी में सुन्यो है जो तुमने बिसनपद बहु[3] कीये हैं जो मोकों परमेश्वर[4] नें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते तुमहूँ कछू गावौ। तब सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सो पद। रागबिलावल। "मना रे तू करि माधो सों प्रीति।" यहपद देशाधिपति के आगे संपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सो यह पद कैसो है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहै तौ भगवदनुग्रह की सादा सार्ति रहै, और संसार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसंग कौ सदा भय रहै, और भगवदीय के संग की सदा चाह रहै और श्रीठाकुर जी के चरणारविंद ऊपर सदा स्नेह रहै, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसो पद देशाधिपति कों सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्रा विधि। ३ वहुत। ४ पनमेश्वर।

सेा सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयेा और कह्यौ जेा सूरदास जी मेाकों परमेश्वर[1] ने राज दीनें है सेा सब गुनीजन मेरेा जस गावत हैं ताते मेरेा जस कछू गावैा। तब सूरदास जी ने यह पद गायेा। सेा पद। राग केदारेा। "नाहिन रह्यौ मनमें ठौर।" यह पद संपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायेा। सेा सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[2] अपने मन में विचारयौ जेा ये मेरेा जस काहे कों गावेंगे जेा इनको कछू मेरी बात कों लालच होय तेा गावै ये तेा परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समाप्त में गायेा। "हेा जेा सूर ऐसें दर्श को इमरत[3] लोचन प्यास।" यह गायेा है। देशाधिपति ने पूछेा जेा सूरदास जी तुम्हारे लोचन तेा देखियत नाहीं सेा प्यासे कैसें भरत हैं और बिन देखें तुम उपमा को देत हेा सेा तुम कैसें देत हेा। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोलेा जेा इनके लोचन हैं सेा तेा परमेश्वर के पास हैं सेा उहाँ देखत हैं सेा वर्णन करत हैं। तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जेा इनको कछू दीयेा चाहियें परि यह तेा भगवदीय है इनकों कछू काहू बात को इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सें बिदा होयकें श्रीनाथ जी द्वार आयें।

प्रसंग ४

एक समय[4] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[5] सेा कोई[6]

१ परमेश्वर। २ पातसाह। ३ ए मरत। ४ समें। ५ जात है। ६ कोऊ।

चौपड़ खेलत हुते। सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो कोऊ आवते जाते की सुधि नाहीं। ऐसे खेल में मग्न हैं। सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय है तिनसो सूरदास जी नें कह्यौ जो देखौ वह प्राणी कैसो अपनौ जनमारो[2] खोवत हैं। भगवान ने तो मनुष्य देह दीनो है सो तो अपनी सेवा भजन के लियै दीनी है सो ये तो या देह सों हाड कूटत हैं। या में यह लोकिक सिद्धि नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक में भगवान ते बहिर्मुख। तातें श्रीठाकुर जी ने इनकौ मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहियै। सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने संगकेन सों कह्यौ। सोपद।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार॥ १॥
साध संगति डारि फासा फेरि रसना सारि।
दाव अबकें पयौ पूरौ उतरि पहिलो पार॥ २॥
वाकसत्रे सुनि अठारे पच[3]ही कों मारि।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक बिचार॥ ३॥
काम क्रोध जंजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि।
सूर हरि कें पद भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार॥ ४॥

यह पद सूरदास जी नें अपने संग के भगवदीयन सों कह्यौ।

१ है। २ जनारो। ३ पंच। ४ काने।

सेा या पद में सूरदास जी नें कहा कह्यौ 'मन तू समझि सेाच बिचार।' ये तीन्यौ वस्तु चौपड़ में चाहियै सेाई तीनेां वस्तु भगवान के भजन में चाहियै। काहे ते जेा समझि न होय तौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चहियै। और सेाच कहियै चिंता, सेां भगवान के प्राप्त[1] की चिंता न होय तौ संसार ऊपर वैराग्य केसें आवै ताते सेाच कहियै। और विचार, जेा या जीव कों विचार हीं नाहीं तौ संग दुसंग में कहा करेगौ ताते बिचार चाहियै। सेा ये तीनेां वस्तु होंय तौ भगवदीय होय ताते ये तीनेां वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियै। और चौपड़ में हूँ ये तीनेां वस्तु चाहियै। समझ कहै गिनवेा न आवतेा गेाट केसें चलै, और सेाच अगम जेा मेरे यह दाव पड़ै तेा यह गेाट चलूँ, विचार जेा वाही में तन मन। जेा यह वस्तु होय तेा चौपड़ खेली जाय। सेा वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

प्रसंग ५

बहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताईं श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बीच बीच में श्रीगेाकुल श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन कों आवते। सेा एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगेाकुल आये श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये और बाललीला के पद बहुत सुनाये। सेा श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भये।

१ प्राप्ति। २ हे।

पाछें श्रीगुसांई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयौ सेा पालना सूरदास जी कों सिखायौ। सेा पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी झुलत हुते ता समय गायौ। सेा पद। राग रामकली। "प्रेम[1] पर्यंक शयनं" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद किये सेा सुनि कें श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भये। पालना के भाव अनुसार पद गायेा। सेा पद।

राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥१॥
कटुलाकंठ रुचिर केहरि नख व्रजमाल बहुतई अमोलनि।
वदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥२॥
लीन्यौ कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि।
कहैं जन सूर कहाँ लों बरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥३॥

गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सेाभा जेा बढ़ी अति स्याम मनोहरि गति ॥१॥
उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत।
चकृत नेन चहूँ दिस चितवत और सबन कों देत ॥२॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर विधि सें लाये मिलत उपहार ॥३॥

१ प्रेष।

गिरि गिरि परत बदनते ऊपर है दधिसुत के बिंदु ।
मानहू सुधाकन खोरवत पिय जिय दुंद[1] ॥४॥
बालबिनोद बिलोक सूर प्रभू बित भई व्रज की नारि ।
फुरत न बचन वरजिवे कों मनराही[2] बिचार बिचार ॥५॥

राग जैतश्री

कहाँ लग वरनेा सुन्दरताई ।
खेलत कुमर कतिक आँगन में नेन निरखि सुखभाई ॥१॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुंदर के बहु विधि रंग विवनाई ।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य[4] चढ़ाई ॥२॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई ।
मानहूँ असुर देव गुरु सेां मिलि भूमि जसेा[6] समुदाई ॥३॥
अति सुदेश मृदु चिहर[7] हरत मन मेाहन सुख वगराई ।
मानहुं मंजुल कंज[8] ऊपर वरअलि अवलि फिर आई ॥४॥
दूधदंत छबि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई ।
किलकत हंसन दुरति प्रगटत मानेा विंधु[9] में बिपुलताई ॥५॥
खंडत बचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखेा सखी एक अद्भुत रूप ।
एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥१॥

---

१ जनदिंदु । २ रहि । ३ कुलहे । ४ धनुष । ५ मणि । ६ भूमिज सेा ।
७ चिहुर । ८ कंजन । ९ विंदु ।

एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ।
पंचवार चढ़ि गहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥२॥
सिसुगन में भई सोभा कोउ करौ बिचार ।
सूर श्रीगोपाल की छबि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जी ने गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

प्रसंग ६

अब सूरदास जी नें श्रीनाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताईं । ता उपरांत भगवद इच्छा जानी जेा अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है । यह विचारिकें जेा नित्य लीला फलात्मक रासलीला जेा जहाँ करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जो आये । श्रीनाथ जी की ध्वजा कौ दंडौत करिकें ध्वजा के साम्हे सन्मुख करिकें सूरदास जी सोये परि अंतःकरन यह जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे । अब यह देह तौ थकी ताते अब या देह सें श्रीनाथ जी को दर्शन होय तौ जानिये परम भाग्य है । श्रीगुसाईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं । ऐसे बिचार के सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौं चिंतवन करत हैं । और श्रीगुसाईं जी केसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहाँ स्मरण करत हैं तैसे ही श्रीगुसांईं जी इनको छिनहूँ नहि भूलत है ।

श्रीनाथ जी को सिंगार होतौ ता समय सूरदास जी मणि कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते । सेा तादिन श्रीगुसांईं जी श्री-

नाथ जी कौं सिंगार करत हुते और सूरदास जी कौ कीर्तन करत न देखौ तब श्रीगुसांई जी ने पूछौ सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे ते। तब काहू वैष्णवन ने[1] कह्यौ जो महाराज सूरदास जी तो आज परासोली की ओडी[2] जात देखे है। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जो भगवदि इच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदास जी परासोली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सों कह्यौ जो पुष्टमार्ग कों जिहाज[3] जात हैं जाकों कछू लेनों होय तौ लेउ और जो भगवद इच्छा ते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तो में हू आवत हों। पाछें श्रीगुसाईं जी वेर वेर सूरदास जी की खबरि मँगायेा करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदास तो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयो।

सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद-स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आये। सो आवत ही सूरदास जी सों श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जो सूरदास जी केसे हैा। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हैा महाराज की वाट देखत हुतौ। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायेा। सो पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

राग सारंग

देखो देखौ हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभू जान सिरोमनराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥
बदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत ही है ऐसें ।
ऐसें विमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखौ तब तैसे ॥३॥
भक्त बिरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभू कों कत दीजे पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ । सेा सुनिकें श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जेा ऐसेा दैन्य प्रभू अपने सेवकन कों देहि या दैन्य के पात्र एही है । तब वा वेर श्रीगुसांई जी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हू ठाडे हुते । तब चत्रभुजदास ने कह्यौ जेा सूरदास जी ने भगवद् जस वर्णन कीयेा परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों जस वर्णन ना कीयेा । तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बेाले जेा में तेा सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों ही जस वर्णन कीयेा है कछू न्यारेा देखूँ तेा न्यारेा करूँ परि तेरे साथ कहत हेा या भाँति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ । सेा पद ।

---

१ कृपाया सुख की ।

राग बिहागरो

भरोसौ दृढ़ इन चरनन केरो ।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु सब जगमांझि अंधेरो ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरो ।
सूर कहाकहि दुबिधि आंधिरो[1] बिना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यौ । पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई । तब श्री-गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहाँ है । तब सूर-दास जी ने एक पद और कह्यौ । सो पद ।

राग बिहागरो

बलि बलि बलि हो कुमर राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी कैसें होत है छानी ॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी ।
ते पुनि श्याम सहज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥२॥
पुलकित अंग अब ही ह्वै आयो निरखि देखि निज देह सयानी ।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयो विहसानी ॥३॥

यह पद कह्यौ इतनों कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस कें भरे नेत्र देखे । तब श्रीगुसांई जी ने पूछो जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहाँ है । तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ । सो पद ।

---

[1] आंधरो ।

राग बिहागरो

खंजन नैन रूपरस माते।

अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते।

चलि चलि जात निकट श्रवन[1] के उलटि पुलटि ताटंक[2] फँदाते।

सूरदास अंजल[3] गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनों कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयो। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आये। तातें सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवण। २ ताटंक। ३ अंजन।

अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

सेा वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते। सेा श्रीरणछोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले। सेा आपन[1] मीराबाई के गाँव आयेा। सेा वे कृष्णदास मीराबाई के घर गये। तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैष्णव हुते। सेा काहू कों आये आठ दिन, काहू कों आये दश दिन, काहू कों आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी बिदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तेा आवत ही कही जेा हूँ तेा चलूंगेा। तब मीराबाई ने कही जेा बैठेा। तब कितनेक महेार श्रीनाथ जी कों देन लागी। सेा कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जेा तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सेा ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सेा जब आगे आये तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जेा तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा भेट की कहां[2] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक बैठे हुते तिन सबन की नांक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलते। यह हू जानेंगे जेा एक वेर शूद्र श्री-

१ आपन। २ वैष्णव। ३ कहा।

आचार्य जी महाप्रभून को सेवक आयो हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

प्रसंग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते। सो श्री-आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करते[3]। सो भेट आवती सो खरच होती, कछू संग्रह न राखते, सब खरच होय जातो. और बंगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कृष्णदास को आज्ञा दीनो जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहो सेवा टहल करो तब कृष्णदास अधिकारी भये, अधिकार करन लागे।

पाछे एक दिन मथुरा को चलन लागे सो अडींगलों पहुँचे तब पेंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते व्रज में फिरयो करते सो कृष्णदास को मिले। तब अवधूतदास ने कह्यो जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जो मथुरा जात हौं कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछो जो श्रीनाथ जी की सेवा कोन करत है। तब कृष्णदास ने कही जो बंगाली करत हैं। तब अवधूतदास ने कही जो श्रीनाथ जी को अपनो वैभव बढ़ावनो है ताते तुम बंगालीन को दूर क्यों नाहीं करत। सो अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कह्यो जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं। सो तब बंगाली श्रीनाथ जी को भोग धरते सो उनकी चुटि[4] में छोटो सो स्वरूप हुतो

१ मुकट। २ हे। ३ धरते। ४ चुटिया।

देवी को सो सामने बैठावते जब भोग सरावते। वा देवी कौ अपनी चुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते। सो बात अवधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अवधूतदास ने कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम बंगालीन को दूर करौ। तब कृष्णदास ने कही जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा बिना कैसे काढ़ें। तब अवधूतदास ने कह्यो जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसांई जी की आज्ञा ले आवो। जैसे बने तैसे इन बंगालीन को काढो।

तब कृष्णदास अर्डींगते फिरे। सो श्रीगोवर्द्धन आये। तब बंगालीन सों कह्यौ जो हूँ तौ श्रीगुसांई जी के पास आडेल जात हों तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सों किरयो[1]। और सब सेवक हुते तिनसों कृष्णदास ने कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसांई जी के पास कछू काम है सो अडेल कों जात हों तुम सावधान रहियो। ता पाछें श्रीनाथ जी सों बिदा होय के अडेल कों चले। सो दिन १५ में श्रीगुसांई जी के पास आप पहुँचे सो आयके श्रीगुसांई को दंडोत कीये। तब श्रीगुसांई जी ने पूछी जो कृष्णदास तुम क्यों आयो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव बढ़ावनों है और बंगालीन ने बहुत माथौ उठायौ है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरून को देत हैं।

तब श्रीगुसांई जी कहैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयो सो एक लक्ष की भेटभई। पाछें अडेल आये। तब श्रीगोपी-

१ करियो।

नाथ जी ने कही जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयौ सो सब श्रीनाथ जी को है श्रीनाथ जी कों विनियोग कियौ चाहिये। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहके पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सो जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयें। पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कियौ। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोरा डबरा चमचा तश्ती प्रभृत सब सोना रूपा के किये। सब करिकै श्रीनाथ जी सों बिदा होयकें श्रीगोपीनाथ जी अडेल आये। ता पाछें बंगाली बरस एक के भीतर सब ले गयै। अपने गुरु के यहाँ जाय के दीयौ। यह बात श्रीगुसांई जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जो बंगालीन ने माथौ उठायौ परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सो केसें निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जो बंगालीन कों निकासौ ताते आप या बात में कछू मति चालो। मोकों आप आज्ञा करौ तौ अपनो आप कर लेउंगौ। जेसे बंगाली निकसेंगे तेसे काढूँगौ। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज दोय पत्र लिखये, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसांई जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडर मल्ल कौ और बीरबल कों। लिखौ जो कृष्णदास कों श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं जो तुमसों कृष्ण दास कहैं सो करि देउंगे[1]। सो पत्र लेकें श्रीनाथ

१ देउगे।

द्वारिका[1] कों चले। सो आगरे आये। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीरबल सों मिले। पत्र श्रीगुसांई जी के हुते सो दीये। सो उन पत्र बाँचि कें कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम कहौ तैसें करें। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तो में मथुरा जात हौं बंगालीन कों काढिवे कों।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों बिदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार को चले। सो मथुरा आये। तब मार्ग में अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सों अवधूतदास ने कही जो कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बंगालीन कों काढो, श्रीनाथ जी की ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव फैलावनों हैं। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीगुसांई जी की आज्ञा लेके आयो हौं अब जाय कें बंगालीन कौ काढत हौं। इतनों कहिकें कृष्णदास चले। सो श्रीनाथ जी द्वार आये। सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहाँ उनकी झोंपरी हुती। सो कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सोर भयौ। तब बंगाली सेवा छोड़ कै पर्वत के नीचे आये। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दिये। तब बंगाली देखें तौ कृष्णदास नें झोंपरी में आग लगाय दीनी है। तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बंगाली तहाँ ते भाजे सों मथुरा आये। तब रूपसनातन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने में कृष्णदास

१ श्रीनाथ जी द्वार।

हू आय ठाडे भयै । तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जेा क्यों रे शूद्र तू कोंन जेा इन ब्राह्मणन कों मारे । तब कृष्णदास ने कही जेा हूँ शूद्र हों परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नाहीं, तुमहू तेा कायस्थ हैा । तब सनातन ने कह्यौ जेा यह बात पातसाह सुनेगेा तौ तू कहा जवाब देयगेा । तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा हों तेा नीके जवाब देउंगेा परि तुमकेा जुबाब देन में दुःख होयगेा, और तुमकों जुवाब आवेगेा[1] जेा तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सेां दंडौत करावत हैा । तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहे और बंगालीन सेां कह्यौ जेा तुम जानेा ये जानें ।

तब बंगाली मथुरा के हाकिम पास गयै । तब कृष्णदास जाय ठाडे भयै । तब हाकिम ने कह्यौ जेा भयैा सेा तेा भयैा परि अब इनकों राखेा । तब कृष्णदास ने कह्यौ जेा अब तौ इनका[2] न राखेंगें । ये तौ हमारे चाकर हुते सेा हमने इनकों सेवा सेांपी हुती सेा ये सेवा छोड़ कें क्येां आये । जेा इनकी झोंपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे । ताऊपर तुम कहत हैा जेा हम श्रीगुसांई जी कों लिखेंगे । वे कहेंगे तेसे करेंगे । तुम श्रीगुसांई जी कों लिखेा ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आये और बंगाली सब अपने श्रीकुंड आये । तब कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी कों पत्र लिखेा तामें बंगाली काढे सेा सब समाचार बिस्तार करिकै लिखे और लिख्यौ

१ न आवेगेा । २ इनकेा ।

जो अब पधारियै तौ भलौ है। सो पत्र श्रीगुसांई जी के पास अडेल आयौ। ता पाछे श्रीगुसांई जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आये। तब वे बंगाली सब आये। तब श्रीगुसांई जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सों कृष्णदास ने हमकों काढे। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो तुम सेवा छोड़ के क्यों गये दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खाँयगे कहा। तब श्री गुसाँई जी ने इनकों श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियों जो आवै सो खाइयो। तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीन ने श्री गोवर्द्धन रहिवों छोड़ दीयौ। ता पाछें श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी कौ अपनों वैभव बढ़ावनों हौ सो सब भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन कों नेग जो जा भाँति श्रीनाथ जी ने कह्यौ ता भाँति श्रीगुसाँई जी ने बाँधे। तब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्ण दास अधिकार करन लागे।

प्रसंग ३

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनि[3] जो श्याम मति[4] को लेकें ताल पखावज ले कें तू परासोली में आईयौ।

१ वे। २ बहुरि। ३ दीनी। ४ कुमरि।

सेा श्यामकुमर आछौ मृदंग बजावते । सेा श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरांत अनेासर भयौ तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये । तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सेां कही जेा श्री नाथ जी ने आज्ञाकरी है सेा मृदंग ले के परासेाली चलेा । तब श्यामकुमर ने कह्यौ जेा मेाहू कों श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है तातें चलिये । तब श्यामकुमर मृदंग ले कें आयौ ।

तब कृष्णदास और श्यामकुमर ये दोऊ जने परासेाली सेां देखे तेा श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित बिराजे हैं । तब श्री नाथ जी ने श्यामकुमर सेां कह्यौ जेा तू तेा मृदंग बजाय, और कृष्णदास सेां कह्यौ जेा तू कीर्तन करि और श्रीनाथ जी और श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयौ । तहाँ कृष्णदास ने पद गायौ । सेा पद ।

राग केदारौ ।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग
लाग डाट उरपतिरपरास संग राखौ ।
झपताल मिल्यौ राग केदारौ
सप्तसुरन अब घर तान रंग राख्यौ ॥
पाई सुख सिद्धि भरतकाम विविध रिद्धि
अभिनव दल लसत सुहाग हुलास रंग राख्यौ ।
वनिता सत जूथ संग लिये निरखत क्यों सघस[1]
चंद बलिहारी कृष्णदास सुघर[2] रंग राखौ ॥

१ सघन । २ सुघर ।

यह पद कृष्णदास ने गायौ । श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ । श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ । ताते श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजी कृष्णदास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते ।

प्रसंग ४

और कृष्णदास नें बहुत पद कीये । तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णदास सों पूछ्यो जो तुम पद करत हो ता में मेरी छाया है । तब कृष्णदास ने सूरदास जी सों कह्यौ जो अब के ऐसो पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे । तब कृष्णदास एकांत में बेठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागे जो जामें तीन तुक को[1] कीयौ और चौथी तुक बने नाहीं । तब घडी दोयलो विचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलो फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे । सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहांई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे ।

जब कृष्णदास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिख दीये । कृष्णदास ने आधो पद कियो हुतो ताकों आप श्रीनाथ जी पूरो करिकै आप तो पधारे । ता पाछें कृष्णदास प्रसाद लेकें आये तब देखो तो श्रीनाथ जी पूरो पद करिकै श्रीहस्त सों लिखि गये हैं । सो देख के कृष्णदास बहुत प्रसन्न भयो और कहैं जो सूरदास जी आवें तो पद सुनावै । तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन कों

१ तो ।

आयै तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयौ पद एक मेनें कीयेा है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जो ने कह्यौ जेा कहौ सुनें तौ जानें। तब पद कह्यौ। सेा पद।

राग गैारी

आवत बने कान्ह गेापबालक संग
नेंचुकी खुर रेणु छुरतु[1] अलकावली॥
भैांहें मनमथ चाप वक्र लेाचन बान
सीस सेाभित मत्त मयूर चंद्रावली॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरेामणि वदन
निरखि फूली नवल जुवती कुमुदावली॥
अरुण सकुच अधर बिंबफल हसात
कहत कछुक प्रकटित हेात कुंद रसनावली।
श्रवण कुंडल भाल तिलक वेसरि नाक
कंठ कैास्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपानि
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली॥

अथ श्रीनाथ जी कृत।

वलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज
मुद्रिका कर दल बिराजत नखावली॥
कण[2]तर मुरलिका मेाहित अखिल विश्व
गेापिका जनमसि ग्रसथित प्रेमावली॥

---

1 छुरित। 2 कृण।

कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज वलित भृगरेामावली।
धायक वहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गंड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली॥
पीत कौसय परिधाने सुन्दर अंग चरण
नुपुरवाद्य गीत सबदावली॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली॥

यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगे कह्यौ। सेा सूरदास जी तीन तुक ताँहि तेा बेाले नाहीं। और तीन तुक के आगे कहन लागे तब सूरदास जो ने कृष्णदास सेां कह्यो जो कृष्णदास मेरे तुमसेां वाद है और प्रभून सेां वाद नाहीं में प्रभून की बानी पहिचानत हेां। तब कृष्णादास चुप कर रहे। ताते कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछू सामग्री चाहियत हुती। सेा कृष्णदास गाडा लेकें आगरे कैा आये। सेा आगरे के बाजार में एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती। सब लेाग तमासेा देखत हुते। सेा कृष्णदास बाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब वह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सेा वह वेश्या

बहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तेसोई करे। सेा कृष्णदास वा वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहैं जेा यह तौ श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछें वा वेश्या कों दशमुद्रा तौ वहाँ ही दिये और कही जेा रात्रि कों समाज सहित आइयौ। ता पाछें कृष्णदास उहाँ हवेली में उतरे। सेा सामग्री चाहियत हुती सेा सब लेकै गाडा लदाय सिद्धि करवायौ।

ता पाछें रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछें नृत्य भयेा गान भायौ। वापै कृष्णदास बहुत रीझें सेा रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सों कह्यौ जेा तेरौ गान हू आछौ और नृत्य हू आछौ परि हमारेा सेठ है सेा तेरे ख्याल टप्पा ऊपर रीझेगेा नाहीं ताते हेा कहेा सेा गाइयौ। ता पाछें कृष्णदास नें एक पूरबी राग में पद करि कें सिखायौ। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या कों साथ ले के चले सेा आगरे तें आये। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आये। सामग्री सब भंडार में धराई। ता पाछे जब उत्थापन कों समय भयौ तब कीर्तनियाँ काहू कों बागे[1] न दीये। तब वा वेश्या कों समाज सहित ले गये। श्री गुसाँई जी मंदिर में ठाढ़े श्रीनाथ जी कों मूंढा[2] करत है और मणि कोठा में वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ॥ सेा पद॥

राग पूरबी॥

मेामन गिरधर छवि पर अटक्यौ।
ललित त्रिभंगी अंगन परि चलि गयौ तहांई ठटक्यौ॥ १॥

१ बागे लेजान। २ मूंढा।

सजल श्यामघन चरण नीलद्वै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥२॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सेा जब गावत गावत पिछली तुक आई जेा "कृष्णदास कियौ प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यौ" इतनेां कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गये और दिव्य स्वरूप धरि कै श्रीनाथ जी की लीला में प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सेा मरन लागे जेा हमारी तौ या तें जीविका हुती अब हम कहा खायंगे। तब कृष्णदास नें कह्यौ जेा तुम क्यों रोवत हौ चलौ नीचे खायवे कों देऊँ। तब उन समाजिन कों नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया दे बिदा कियै।

कृष्णदास ने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथ जी नें वा वेश्या कों अंगीकार करी। ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भांति सें अंगीकार करत हैं।

प्रसंग ५

और कृष्णदास कों गंगाबाई सें बहुत स्नेह हुतेा सेा श्री-गुसाँई जी कों न सुहावतेा। सेा एक दिन श्रीगुसाँई जी श्रीनाथ जी कों भेाग समर्पित हुते सेा सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टी परी ताते श्रीनाथ जी आरेागे नाहीं। परि भेाग तौ समर्प्यौ। ता पाछें समय भयौ तब भेाग सरायौ। तब आरती करि अनेासरि करि कें श्रीगुसाँई जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

भीतरिया सब ने प्रसाद लीयो। तब श्रीगुसाँई जी आप तो भोजन करिकें पोढ़े। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कें जगायो और वासूं कहैं जो हूँ तो भूखो हूँ। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यो जो महाराज श्रीगुसाँई जी नें भोग समर्प्यो है और तुम भूखे क्यों रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग में तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती ताते राजभोग आरोग्यो नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसाँई जी के पास आयो। सो श्री गुसाँई जी भोजन करिकें पोढ़े हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसाँई जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसाँई जी चौंकि उठे तब देखें तो श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भीतरिया सों पूछो जो यहाँ इतनी वेर कहाँ आयो हो। तब वा भीतरिया ने कह्यो जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोकों लात मारिकें जगायो और कह्यो जो आज तो मैं भूखोहौं। तब मैंने श्रीनाथ जी सों कह्यो जो महाराज भोग तो श्रीगुसाँई जी ने समर्प्यो है तुम भूखे क्यों रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृष्टि परी ताते मैं नाहीं आरोग्यो।

तब श्रीगुसाँई जी सुनत ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसाँई जी के साथ ही आयो। तब श्रीगुसाँई जी नें वा भीतरिया सों कही जो भात और बड़ी करो जो तत्काल सिद्ध होय आवै। तब भात और बडी करी सो तत्काल सिद्ध भयो। तब श्रीनाथ जी कों भोग समर्प्यो। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

---

१ वह।

ऊपर आये। तब श्रीगुसांई जी की आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तो भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठोरो समर्प्यो। ता पाछें समय भयो। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी को पोढाये भोग सरयो हो सो प्रसाद एक डवरा में उहांई रह गयो। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यो हुतो सो उहां ही रह गयो। तब श्रीगुसांई जी डवरा में ते ठलाय के लेत उतरे। पाछें सब सेवकन कौं वह बडी भात को महाप्रसाद रंचक रंचक बांटि दीनों। ता पाछें श्री गुसांई जी आप हू आरोगे। सो वह बडी भात को प्रसाद अति अद्भुत भयो। अति अलौकिक स्वाद भयो। सो श्री गुसांई जी आप सरायो। तब कृष्णदास ठाड़े हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यों न उत्तम होय। तब श्रीगुसांई जी ने हंस के कही जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

प्रसंग ७

अब जो यह बात श्रीगुसांई जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों बिगाडी। तब श्रीगुसांई जी सों श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढ़ो। तब श्रीगुसांई जी आप तो तहां ते फिरे सो परासोली में आय रहे। तब मन में विचारो जो कृष्णदास कहा मने करेगो परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसी है

सेा श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कें कछू बोले नाहीं। सेा आप परासेाली में रहे। सेा परासेाली में ध्वजा के साम्हे बेठि कें विज्ञप्ति कियौ। और श्रीगुसांई जी तीन दिन तेा श्रीगेावर्द्धन रहते और तीन दिन श्रीगेाकुल रहते। तब ते परासेाली आय रहे। तब श्रीगुसाई जी के मंदिर की खिरकी परासेाली की ओर पडती ताके साह्मे बेठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी में आय दर्शन देते। तब यह जानि के कृष्णदास नें परासेाली की ओर की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांई जी गेाकुल ते जब परासेाली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभेाग आरती करिकें अनेासरि करिकें श्री-गुसांई जी के दर्शन केा परासेाली आवते। सेा आय के चर-णेादक लेय पाछें प्रसाद लेते। सेा कृष्णदास कें सुहावतेा नाहीं। और सब सेवक श्रीगुसाई जी के दर्शन विना महाप्रसाद केसे लेंय। परि सेवकन सेां कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसांई जी एक पत्र लिखिकें रामदास भीतरिया केा देते और कहते जेा श्रीनाथ जी केा दे दीजे। सेा पत्र श्रीनाथ जी केा देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदास केा देते। सेा रामदास श्रीगुसाई जी केा देते। तब श्रीगुसाई जी वा पत्र केा वाँचि के पानी में पी जाते। या भाँति सेां छै महीना बीते परि श्रीगुसाई जी नें श्रीनाथ जी कें अधिकारी वैष्णव जानि कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून कें सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्री-नाथ जी के विरह केा स्नेह बहुत करते। या भाँति छै महीना भयै।

तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तौ श्रीगुसाईं जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल नें श्रीगुसाईं जी कौ खबर कराई। तब पोरियान नें कही जो श्रीगुसाईं जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन कों आये। तब बीरबल सों श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौं श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी कों खेद बहुत होत है, काका जी परासोली में जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूँ जाय के कृष्णदास कों काढ़ूँगो। यों कहि कें राजा बीरबल श्रीगिरधर जी सों बिदा होय कें मथुरा आये और श्रीगुसाईं जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाँच सो मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावौ। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास कों पकरि लाये। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों। तब श्रीगिरधर जी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसाईं जी सों कही जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीने हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तब श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो तुमनें कह्यौ होयगो। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यौ जो हमने तो बीरबल सों सहज ही कह्यौ हुतौ जो काका जी कों दर्शन

नाहीं करन देते सो काका जी कों बहुत खेद होत है। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो भोजन जब करूँगो तब कृष्णदास आवेगो। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय कें मथुरा कों आये। तब बीरबल सों कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत तातें कृष्णदास कों छोड़ देउ। तब राजा बीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल संग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसाईं जी ने सुनी जो गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत हैं सों श्रीगुसाईं जी टबुरानी घाट ऊपर पहुँचे। और वा ओर ते कृष्णदास आये सो श्रीगुसाईं जी कों दर्शन कियौ, और दंडौत करी, और एक नयौ पद करिकें गायौ। सो पद॥

राग केदारो

श्री बिट्ठल जू के चरण की बलि॥
हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आये आपन चलि॥
उज्जल अरुण दया रंग रंजित दश नख चंद्र विहरत मन निरदलि॥
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि॥
अति सेमरदुलि सुगंध सुशीतल परत त्रिविधि ताप डारत मल॥
भजि कृष्णदास बार एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपुकल॥

यह पद श्रीगुसाईं जी के आगे गायौ। पाछें श्रीगुसाईं जी कृष्णदास कों अपने घर ले आये। पाछें कृष्णदास सों श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो उटो भोजन करो। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो

महाराज आप भोजन करिये पाछें में झूठन लेउगौ। तब श्री-गुसाईं जी भोजन को बैठे। तब कृष्णदास नें एक पद और गायो॥ सो पद॥

राग कान्हरौ

ताही कौं सिर नाइये जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय॥
कीजे कहा आन ऊचे पद तिनसों कहा सगाई मोय॥
सार सार विचार मनो करि श्रुति वचन[1] गोधन लियो निचोय॥
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो बिलोय॥
जाके मन में उग्र भरम है श्रीविट्ठल श्रीगिरधर दोय॥
ताकौ संग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोभिदेन तोहि॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2]॥४॥

यह पद सुनिकै श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भयै। पाछें श्री-गुसांई जी भोजन करिकै पधारे तब कृष्णदास सों कह्यौ जो अब जाउ भोजन करौ। तब कृष्णदास भीतर गयै। तब श्रीगिर-धर जी नें श्रीगुसाईं जी की झूठन को पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनों। पाछें बीडा देाय दियै। रात्रि कों कृष्णदास वहाँई सेाय रहै।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी देाय रही तब श्रीगुसाईं जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियौ। श्रीनवनीत प्रिया जी के मंगला के

---

१ वच। २ छोहि।

दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे की तैयारी किये। तब घोडा दोय मंगाये एक घोडा ऊपर श्रीगुसाईं असवार भयै एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीयै और श्रीगोकुल ते चले। सेां श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक चढ़े जाय पहुँचे। सेा वहाँ श्रीनाथ जी कों राजभोग आयेा हुतेा सेा श्रीगुसाईं जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे। और श्रीगुसाईं जी विज्ञाप्ति पत्र परासोली ते लिखते सेा रामदास भीतरिया के हाथ पठावते। ताकों प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र में लिखि के श्रीगुसाईं जी कों पठावते। सेा श्रीगुसाईं जी जल में घोर पिजाते। सेा पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सेा श्रीगुसाईं जी राखे हुते। सेा पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी कों राजभोग आयेा हुतेा। सेा समय भयेा। तब श्रीगुसाईं जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसाईं जी को देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछ्यो जेा नीके हैा। तब श्रीगुसाईं जी कहें जेा तुमको देखे सेाई दिन नीके हैं। पाछें परस्पर दोऊ जने मुसिक्यायें। पाछें श्रीगुसाईं जी राजभोग सरायेा पाछें वह पत्र हुतेा सेा झापी में धरयेा। पाछें रागभोग के दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसाईं जी राज-भोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसेाई करि भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसाईं जी पेाढ़े। सेा उत्थापन ते घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयेा तब स्नान करि ऊपर पधारे। सेा संखनाद करवायेा। श्रीनाथ जी के उत्थापन

भयै पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करि कें कृष्णदास कों श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कहो जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद ॥

राग कान्हरौ

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै ॥
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सों पति श्रीगोवर्द्धन नाथै ॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै ॥
भनि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीविट्ठल नाथें ॥२॥

यह पद गायौ और बोनती कीनी जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमारो अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयौ। पाछें श्रीनाथ जी कों पोढाय कें श्रीगुसाईं जी नीचे उतरे। श्रीगुसाईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछें श्रीगुसाईं जी दिन दोय रहे पाछें श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागै ॥

प्रसंग ८

सों बहुत बरस लों भली भाँति सों अधिकार कीयौ। पाछें

---

१ धारा।

एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवा-वनों है, और मोकों अपने देश कों जानों है। ताते द्रव्य तुमकों दे जात हौं सो तुम बनवाय दीजों। तब कृष्णदास ने कही जो आछो। तब वह वैष्णव तीन सौ रुपैया देकें अपने देश को गयौ। तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड दिये। कह्यौ जो दोय से रुपैया लाग चुकेंगे तब इनको काढ़ेंगे। सो आछे मुहूर्त देखिकें रुद्रकुंड ऊपर कूआ खुदायौ। तब कितनेक दिन में वह कूआ मोहताई बन के तयार भयौ और दोय से रुपैया लगे। मठोठा बाकी रह्यौ।

तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन को गये। सो हाथ में आसा हुतौ। सो आसा टेक के कूआ के ऊपर ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यौ। तब कृष्णदास कूआ में जाय परे। तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे। सो बहुतेरो ढूढ़ें परि कृष्णदास कौ शरीर हू न पायौ। तब सब मनुष्य उहाँ ते फेरि आये। सो ता समय श्रीगुसांई जी श्रीनाथजी को सेन भोग धरि कें मंजूष विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसाईं जी के पास बैठे हुते। ता समय काहू ने आय कें कह्यौ जो महाराज कृष्णदास ने कूआ बनवायौ है। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टेकि कें कूआ के मौहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यौ सो कूआ में गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूँढवे को उतरे, सौ बहुतेरो ढूँढे परि शरीरहू न पायौ, कहा जानिये कहा भयौ। तब

रामदास जो कहैं जो "अयोगच्छंतितामसाः" तब श्रीगुसाईं जी कहे जो रामदास ऐसें न कहि ।

अब जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो शरीर न मिल्यो ताको कारन कहा । सो ताको कारन यह जो कृष्णदास में कोई अलौकिक जीव हुतो सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयो । और कृष्णदास ने या सरीर सों श्रीगुसाईं जो की अवीज्ञा करी है । जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनों है । सो कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लोकिक सद्य होय कें पूछरी को और एक कृष्ण[1] है पीपर को तहां प्रेत होय कें रह्यो भोग भुगतन कों । ताते कृष्णदास को शरीर कूआ में न मिल्यो । श्रीगुसाईं जो की अवीज्ञा ते कृष्णदास की यह गति भई जो प्रेत होय कें पूछरी की और पीपर के वृक्ष ऊपर बैठे रहत हैं ।

प्रसंग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती । सो गोपीनाथ ग्वाल और पाँच ग्वाल पूछरी की ओर ढूंढ़वे कों गये हुते । सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत ह्वै के बैठे हैं । तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो अरे भैया मेरी बिनती श्रीगुसाईं जी सों करियो और कहियो जो कृष्णदास ने कह्यो है जो हों तुम्हारो अपराधी हौं ताते मेरी यह अवस्था है । हूँ श्रीनाथ जी के

१ वृक्ष ।

पास हूँ तो मेरी गति होत नाहीं ताते मेरो अपराध क्षमा करो तो मेरी गति होय। और बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें वा कूआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह बीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ को बनावायो। तब कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास कों प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताको कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करो और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियों। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज मेरो अपराध क्षमा करो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम्हारो अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। सो श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा कर्यौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पर्श न कीयौ। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौ, मो सों बोलत हौ, और में प्रेत हौं ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोकों दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तौ श्रीगुसाईं जी के बचन के लियै। नाहीं तो प्रेत जोन में दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है।

तेने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तौ भलौ। तब श्रीगुसाईं जी ध्रुवघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ। तब कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ। और श्रीगुसाईं जी कहें जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी। एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसौ न करौ, दूसरे कीर्तन कियें सो अद्भुत कीयें, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ। ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ वैष्णव॥ ९१॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स०॥

अथ परमानन्ददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो परमानंददास जी परम भगवल्लीला मयख्याती[१] श्रीठाकुर जी के परम सखा है। सो जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भये तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून कों श्रीठाकुर जी कों परकार सब प्रगट भयो और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत में प्रगट भये। सो गोपालदास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशांतर परवेस"। ताते परमानंददास जी कौ जन्म कन्नोज में हैं कनोजिया ब्राह्मण के घर भयो। सो वे परमानंददास जी बहुत योग्य भये और कवि भये, भगवद्कृपा के पात्र भये। कीर्तन बहुत आछो गावते ताते परमानंददास जी के संग समाज बहुत रहतो। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सो भगवद् इच्छा ते एक समय परमानंददास जी कन्नौज ते आप प्रयाग[२] कों आये सो प्रयाग में उतरे। सो वहाँ कीर्तन बहुत आछे

१ मध्य याती। २ माग।

गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते। और अडेलते कार्यार्थ लोग बहुत आवते सेा इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल में जाय कहते जेा परमानंददास जी इहाँ प्रयाग में आये हैं सेा कीर्तन बहुत आछें गावत हैं। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया कपूर क्षत्री, सेा उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि वे अवकाश नाहीं पावें जेा परमानंददास जी के कीर्तन सुनिवे कूं आवे। सेवा में अवकाश नाहीं जेा प्राग जाय सकें।

सेा एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयेा। सेा वाने कह्यौ जेा आज एकादशी है सेा परमानंददास जी आज जागरन करेंगें। सेा यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन में बिचारयो जेा आज परमानंद जी के कीर्तन सुनिवे कों चलनें। सेा वे क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सें पहुँच कें रात्रि कों अपने घर आये। सेा घर आय कें अपने मन में बिचार कीयेा जेा या वेर नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य। परि वे पेरवे में भले निपुन हुते सेा मन में बिचारी जेा पैर कें पार जैयै। पाछें अपने घर ते चले सेा श्रीयमुना जी के तीर उपर आय ठाडे भये। तब पर्दनी पहर कें बस्त्र सब माँथे सें बाँधि कें श्रीयमुना जी में पैर कें प्रयाग आये। पाछें बस्त्र पहर कें जा ठौर परमानंद स्वामी उतरे हुते तहाँ आये, सेा इनकेा कछू मिलाप तौ परमानंद स्वामी सें हुतेा नाहीं जहाँ और सब जने बैठे हुते तहाँ एऊ जाय बैठे। परि एउ श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवक है सेा सब कोऊ जानत हुते। ताते सबन नें इनकों आदर कर कें बैठा या सेा ये बैठे।

ता पाछें परमानंद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो विरह के पद काहे को गाये सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जी के परमानंद स्वामी परम सखा हैं। सो उहाँ सो बिछुरे और इहाँ तो अब ही श्रीठाकुर जो को दर्शन नाहीं भयो और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को संग होय तो श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लिये श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्तःकरणन में प्रेरना करिकें परमानंद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जी एक छन हूँ नाहीं छोड़त इनको संग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यों है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकस्यो ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। ताते परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो पद।

राग बिहागरो

ब्रज के बिरही लोग विचारे।

बिन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्बल तन हारे॥ १॥

1 भगवदीयन।

मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे ।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत[1] पनारे ॥२॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे ।
परमानंद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे ॥ ३ ॥
और पद गायौ सो पद ॥

राग बिहागरो

सब गोकुल गोपाल उपासी ।
जो गाहक साधन के ऊधो सो सब बचन ईस पुर कासी ॥ १ ॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाँड़त क्यों रति जासी ।
अपनी सीतलता तहा छोड़त यद्यपि बिधु राह है ग्रासी ॥ २ ॥
किंह अपराध जोग लिखि पठयौ प्रेम भजन ते करत उदासी ।
परमानंद असी को बिरहन मागें मुक्ति गुनरासी ॥ ३ ॥

राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को ।
नंद नंदन बिन कासों कहिये सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको ॥१॥
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद राति कौ ।
कहा वे मंद सुगंध अमल[3] रस कहा वे षट् पद जलजातन कौ ॥२॥
कहा वे सेज पौढ़िबो बन कौ फूल बिछौना मृदु पातन कौ ।
कहा वे दरस परस परमानंद कोमल तन कोमल गात[4] कौ ॥ ३ ॥

---

१ बहत । २ नोट :—यह पद सूरसागर में सूरदास के नाम से आया है ।
३ अमल । ४ गातन ।

राग कान्हरो

माई को मिलिवै नंद किसोरे ।
एक वार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे ॥ १ ॥
जागत जाम गनत नहीं खूंटत क्यों पाऊँगी भोरे ।
सुनरी सखी अब कैसें जी जै सुन तमचर खग रोरे ॥ २ ॥
जेा यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू बन होरे ।
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे ॥ ३ ॥

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी राति गाये । पाछिली घड़ी चारि रात्र रही तब जेा जेा जागरन में आये हुते सेा सब अपने घर कों गये । तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हुँ परमानंद स्वामी सें 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले । और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये । और परमानंद स्वामी सें कह्यौ जेा जैसे हमने सुने हुते तातें अधिक देखे । तुम परम भगवद् अनुग्रह पूरण हेा । ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय है । ए जेा चलि आये सेा परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आये है नातर भगवदीय काहे कों काहू के घर जाय ।

और यह ऊपर कहि आये हैं जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू के निकट ही रहत है । सेा याकेा हेत यह जेा निकट रहत हैं तेा इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गेाद में बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

परमानंद स्वामी के पद सुने । जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करें । सेा उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून कौं परम अनुग्रह है । ताते श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गेाद में बेठि के परमानंद स्वामी के पद काहे कों सुनने पड़े । सेा ताको हेत यह जेा भगवदीय परमानंद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिबे कों आप पधारे हैं तातें सुने । सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानंद स्वामी सेां जे[1] सी कृष्ण करि के चले । सेा श्री-यमुना जी के तीर ऊपर आये । सेा वहाँ आय के बिचार कीयो जेा नाव की बाट देखें तेा अवार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजेंगे ताते जेसे पैर के आये हुते तेसे ही चले । सेा पैर के पार गये । सेा पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा में तत्पर भये ।

पाछें वहाँ प्राग में परमानंद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सेां आँखि लगी, निद्रा आई । सेा इतने में स्वप्न आयो । सेा स्वप्न में देखे जेा जेसे रात्रि के जागरन में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बैठे हैं और उनकी गेाद में श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये । और स्वप्न में श्रीनवनीत प्रिया जी परमा-नंद स्वामी सेां कहैं और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सेा वा

१ जै (जय श्रीकृष्ण) ।

श्रीमुख को कोऊ सोंदर्य कोटि कंदर्पलावण्य परमानंद स्वामी ने देख्यो। सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीयो और मन में चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो। तब यह मन में विचार्यो जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलघरिया बिना न होयगो, ताते होय तो उनके पास जेये। जो उनसों मिले तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसो परमानंद स्वामी ने अपने मन में विचार कीयो। सो ततकाल प्राग ते अडेल कुं चले। सो श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सो प्रातःकाल को समय भयो। सो प्रथम नाव चली तापर बैठि के पार उतरे। तब आगें जाय के देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जी स्नान संध्या वंदन करत हैं। सो परमानंद स्वामी कों श्रीमहाप्रभू जी को कैसो दर्शन भयो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णचन्द्र सो। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक में लिख्यो है "सोवस्तुनः कृष्ण एवच" ऐसो दर्शन भयो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में श्रीठाकुर जी काहे को बैठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानंद स्वामी के मन में यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछी। सो काहे ते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भयो। ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सों कह्यो जो परमानंद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें बिरह के पद गाये॥ सो पद॥

राग सारंग

कोन बेर भई चलेरी गोपाले ।
हों ननसार गई हों[1] न्योते वार वार बोलत व्रज बोले[2] ॥१॥
तेरो तन को रूप कहाँ गयो भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यो ।
सब सोभाग्य गयो हरि के संग हृदय मों कमल बिरह दह्यो ॥२॥
को बाले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि बिकल मन ।
जो सर्वस्व अक्रूर चुरायो परमानंद स्वामी जीवन धन ॥३॥

राग सारंग

जिय की साधन जिय ही रही रो ।
बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए बिलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥
एक दिन सोंज समीप यह मारग बेचन जात दहीरी ।
प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी बाँह गहीरी ॥२॥
बिन देखें घड़ी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी ।
परमानंद स्वामी बिन दर्शन नेन न नींद बहीरी ॥३॥

राग संगम

वह बात कमल दल नैनन की ।
बार बार सुधि आवत रजनी वहु दुरि देनी सेनी सेन की ॥१॥
वह लीला वह रास सरद की गोरज रजनी आवनि ।
अरु वह ऊची टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥
वसन कुञ्ज में रास खिलायो विथा गमाई मन की ।
परमानंद प्रभू सों क्यों जोवे जो पोखी मृदु वेन की ॥३॥

१ ही । २ बाले ।

या भाँति परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये। सेा सुनिके परमानंद स्वामी सेां कह्यौ जेा कछू बाललीला वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें कह्यौ जेा महाराज में कछू समभत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जेा स्नान करि आउ हम तोकेां समझावेंगे। तब परमानंद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सेां पूछेा जेा महाराज आपको सेवक विरक्त कहा हैं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जेा कछू टहल करत होयगेा।

तब परमानंद स्वामी स्नान केां गये। सेा तब परमानंद स्वामी आगे जायकें देखें तेा यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर छत्री आवत हैं। तब निकट आये सेा साम्हें मिले। सेा उनकेा देखकें परमानंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंद स्वामी नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जेा रात्रि केा जागरन में आप पधारे हुते, सेा श्रीठाकुर जी नें आपकी गेाद में बैठि के मेरे कीर्तन सुने, सेा आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जी ने मेांसेां कह्यौ, जेा मैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया छत्री की गेाद में बैठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं। और आपकी कृपा ते मेरेा भाग्य सिद्ध भयेा है सेा आवत ही तुम्हारी कृपा ते मेाकेां दर्शन भयेा। इतनी बात सुनि के उन जलघरिया ने कह्यौ जेा ऐसे मति कहेा। जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तेा खीजेंगे सेा सेवा छेाड़ के क्यों गये ताते यह बात मति कहेा। तब इतनी सुनिकें परमानंद स्वामी केां आश्चर्य भयेा और कह्यौ जेा ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी केां ऐसेा अनुग्रह है और ये अपनेां स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानंद स्वामी तेा

स्नान को गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर में गयो।

पाछें परमानंद स्वामी श्रीयमुना जी में स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाढ़े भये। तब श्री-आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी आगे आउ बैठी[1]। तब परमानंद स्वामी आप आगे आय बैठे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी को नाम सुनायो। पाछें मंदिर में पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानंद स्वामी कों अनुक्रमणिका सुनाई। काहे ते जो प्रथम परमानंद स्वामी सों श्री-आचार्य महाप्रभून नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंद स्वामी ने विरह को पद गायो। तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यो जो परमानंद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानंद स्वामी ने कह्यौ जो राज में कछू समझत नाहीं। सो परमानंद स्वामी ने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं। जो ये श्रीठाकुर जी सो बिछुरे हैं। बिछुरे के दुःख की तो स्फूर्ति रही और संयोग जो सुख भयो ताको बिसमरन भयो। जो काहे ते जो सब सब लीला विशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर पधारे हैं।

सो परमानंददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीला की स्फूर्ति भई। और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को नाम

१ बैठि।

है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः"। सो श्रीभगवत कौ श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के हृदय में धर्यौ। ताते वाणी तो सब अष्टकाव्य की समान है और ये दोऊ परमानंद स्वामी और सूरदास जी सागर भयै। सो याते जेा श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धरयौ। सो काहे ते जेा सब कोऊ सूरसागर और परमनंदसागर कहते। अब परमानंददास सें श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सें कहैं जेा बाललीला वर्णन करि। सेा परमानंद जी ने तत्काल बाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान गाये॥ सेा पद॥

राग सांमरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
बाललीला गावत सब गेाकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जेाती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गजमेाती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माही।
अपनें प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥ ३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वारं वार लाले।
परमानंद स्वामी गेापाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

१ भवराकृत।

यह पद सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये। फेरि और पद गायौ॥ सेा पद॥

राग बिलावल

जसोधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जेा मूरति ब्रह्मादिक दुर्ल्लभ सेा प्रघटे[1] हैं आय॥ १॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गेाद लिपटाय॥ २॥
रतन जडित पेाढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानंद जस गाई[3]॥ ३॥

राग बिलावल

"मणिमय आंगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सेा ऐसें बाल लीला के पद परमानंददास ने गाये। सेा सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सेा परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पास हैं[4]। सो परमानंददास कों अपने कीर्तन की सेवा दीनी। सो परमानंददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी कों नित्य नये पद करिकें भाँति भाँति के सुनावते। तब अनेासर होतेा तब परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे। श्रीआचार्य जी महाप्रभू नित्य कथा कहते सेा परमानंददास जी नित्य सुनते। सेा ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानंददास जी

१ प्रगटे। २ मुसिकाय। ३ गाय। ४ हे।

सुनावते । सो एक दिन परमानंददास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणारविंद को महात्म सुन्यो । सेा चरणारविंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायो । सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये ॥ सेा पद ॥

राग कान्हरो

चरण कमल वंदौ जगदीश गोधन के संग धाए ।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए ॥ १ ॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानंददास जी नें गायेा और श्री-आचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायेा ॥ सेा पद ॥

राग कान्हरो

" यह मांगों गोपी जन वल्लभ " ॥

यह परमानंद स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायेा । सेा सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जेा यह मिस कर के परमानंददास जी या पद कों सुनाय कें व्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है तातें व्रज कों अवश्य चलनें ॥

प्रसंग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जेा व्रज कों पधा-रवे कों उद्यम कीयेा । सेा दामोदरदास हरिसानी कृष्ण मेघन परमानंददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसेाई की सामग्री

संग लेकें चले और सब वैष्णव संग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रज को पधारे ।

सेा व्रज को आवत परमानंददास को गाम कन्नौज आयेा तब परमानंददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सें वीनती कीनी जेा महाराज मेरे घर पधारिये आपके अनुग्रह ते मेरेा भाग्य सिधि भयेा है अब मेरे घर हू पावन करिये । तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अंतर्यामी कृपानिधान भक्त मनेारथ पूरक आप कृपा करि कें पधारें । सेा परमानंददास के घर आछी भाँति सें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसेाई करि श्रीठाकुर जी कों भेाग समर्प्यो । पाछें भेाग सराय कें आप प्रसाद लीयेा पाछें आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे । तब परमानंददास सेा कह्यो जेा कछू भगवद्यश गावेा । तब परमानंददास ने मन में बिचारी जेा या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तेा व्रज में श्रीगेावर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ । सेा विरह को पद ऐसेा गायेा जामें छिन हूँ कलप समान जाय ॥ सेा पद ॥

राग सेारठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ॥
कमल नैन मन मेाहनी मूरत मन मन चित्र बनावै ॥१॥
एक वार जाय मिलत माया करि सेा कैसे विसरावै ।
मुख मुसिक्यान वंक अविलेाकन चाल मनेाहर भावै ॥२॥
कबहुक निवड तिमर आलिंगन, कबहुक पिक सुर गावै ।
कबहुक संभ्रम कासि कासि कहि संगहीन उठि धावै ॥३॥

कबहुँक नैन मूदि अन्तर गति मणि माला पहरावै।
परमानंद श्याम ध्यान करि ऐसे बिरह गवावै ॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायो। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानंददास नें गायो ता लीला विषै श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसंधान न रह्यौ। सो तीन दिन लों श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करे सो वेसे ही बैठे रहै। चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्रीआचार्य जी महाप्रभू सावधान भये तब सब वैष्णव प्रसन्न भये। तब परमानंददास जी मन में डरपे जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद ॥

राग बिभाग

माई री हों आनंद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधो जो माँगो सो पाऊँ ॥ १ ॥
अब[1] ते कमलनैन व्रज आये सकल संपदा बाढ़ी।
नंदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥ २ ॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजे।
मारग मेघ इंद्र वरषा में कृष्ण कृपा सुख लीजे ॥ ३ ॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्तकर्ष जनावै।
परमानंददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥

१ जब।

और हू पद गायौ। सेा पद।

राग गौरी। "बिमल जस बृन्दावन के चंद्र को"

यह पद सम्पूरण करिकें गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारंग। "चलिरी नंदगाँव जाय बसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सेा पद में यह कह्यौ जेा चलरी नंदगाँव जाय बसियै।

सेा श्रीमहाप्रभू जी सुनि के ब्रज कों पधारे। सेा श्रीगेाकुल आवत ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊपर छोंकर के नीचे बैठक में तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे। और एक बैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मंदिर के पास हैं सेा भीतर की बैठक है। सेा रात्रि के विश्राम तथा रसेाई की ठेार है। उहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभून को घर हुतेा। जब आप श्रीगेाकुल पधारते तब उहांई उतरते। सेा यह भीतर की बैठक है। पाछें सब वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीये और परमानंद-दास जी हू श्रीयमुना जी को जस वर्णन कीये॥ सेा पद॥

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हेां पाऊँ।
तिहारे निकट रहेां निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १॥
मंजन बिमल पावन जल चिंता कुलख बहाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊँ॥ २॥
बिनती करौं यही वर मागौं अधम संग बिसराऊँ।
परमानंददास फलदाता मगन गेापाल लडाऊँ॥ ३॥

राग रामकी। "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजे[1]"

सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानंददास जी नें बहुत गाये। श्रीआचार्य जी आगें तीर विषें गाये।

ता उपरांत श्रीमहाप्रभू जी नें परमानंददास कों बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवाये। सो परमानंददास को ऐसो दर्शन भयो सो सब व्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि ले जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और व्रज भक्तिन कों जल की गागरि उठाय देते है और उनकी कचु[2] तोरे हैं या भाँति सो दर्शन भये। सो तैसोंई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायो॥ सो पद॥

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चंद्रावलि नारी।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी॥ १॥
नैनन सों नैना मिले मन रह्यो है लुभाई।
मोहन मूरत जिय बसी पग धरो न जाई॥ २॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट।
परमानंद ऐसी मिली जैसी गुड में चेंट॥ ३॥

राग सारंग

लाल नेक टेको मेरी वैयां।
औघट घाट चल्यो नही जाई रपटत हों कालिन्दी महियां॥ १॥

---

१ लीजै। २ कंचुकी।

यह पद संपूरण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानंद-नें बाल लीला के पद बहुत गाये और श्रीगोकुल कों स्वरूप जामें आवै ऐसो पद गायो॥ सो पद॥

राग कान्हरो

गावत गोपी मधु व्रज बानी।
जाके भुवन वसत त्रिभुवनपति राजा नंद यसोधा[1] रानी॥१॥
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी।
गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी॥२॥
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्र मुखरास।
मन क्रम वचन प्रीत यह अम्बुज अव गावत परमानंददास॥३॥

यह पद परमानंददास नें गायो। पाछें और पद गायो सो पद॥

राग कान्हरो

जसुमति ग्रह आवत गोपी जन॥
वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमल मुख निरखन॥१॥
चाहत पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसत मन हीं मन।
लोंन उतारि दोऊ करि वारी फेर वारत[2] तन मन धन॥२॥
लेन उठाय चापत हीयो भरि प्रेम दिवस[3] लागे दृग ढरकन।
चली ले पलना पोढावन को अरुकसाय[4] पोढे सुन्दर घन॥३॥
देत असीस सकल गोपी जन चिरजीवो लोग गज मुन।
परमानंददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरंजन॥४॥

१ जसोधा। २ डारत। ३ विवस। ४ अरकसाय।

राग हमीर । "चितै चितै चित वारयौ री माई"

यह पद संपूरण करि कें गायै । सेा ऐसे पद परमानंददास ने बहुत गायै ।

ता पाछें श्रीगेाकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानंददास श्रीगेाकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये । सब ऐसे पद गायै जा में श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मोकों श्रीगेाकुल में आय कें चरणारबिंद के नीचे राखेा । नितप्रति प्रभून के दर्शन करौ[1] । सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषेात्तम हैं । और यह पद गायेा ॥ सेा पद ॥

राग कान्हरौ

यह मागैा जसेादानंदन ॥
चरण कमल मन मन मधुकर या छबि नेनन पाऊँ दर्शन ॥१॥
चरण कमल की सेवा देाऊ तन राजत बिजलता घन नंदन ।
वृषभानु नंदिनी मेरे उर वसु[2] प्रान जीवन घन ॥२॥
बृज वसिवेा जमुना अचिवेा श्रीवल्लभ केा दास यही पन[3] ।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानंददास जीवन धन ॥३॥

राग कान्हरौ

"जब लगि जमुना गाय गेावर्द्धन ।
तब लग गेाकुल गाँव गुसांई" ॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये । तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गेाकुल में विराजे । ता पाछें

---

१ करूँ । २ सर्वसु । ३ मन ।

सब वैष्णवन कों संग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन को पधारे ॥

प्रसंग ३

अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे। सो आवत ही परमानंददास नें श्रीनाथ जी कों श्रीमुख देखि कें वहाँ के वहाँ रहे। तब श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सों कह्यौ जो परमानंददास कछू भगवत लीला गावो। तब परमानंददास अपने मन में विचारे जो कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारो जो जामें प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणारविंद की बंदना, पाछें भगवद्गुण कों स्वरूप, ता पाछें बाल क्रीडा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म। ऐसो पद परमानंददास नें गायो ॥ सो पद ॥

राग कान्हरो

मोहन नंदराय कुमार।
प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज बन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुंडल गंड मंडित चारु नेन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत।
दास परमानंद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति को पद गायो ॥

राग पूरबी

मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ।
मेरौ नेन और कमल नैन कौ इकठौरो करि मान्यौ[1] ॥ १ ॥

१ सान्यो।

लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यौ।
एक गोविंद चरण के कारण वैर सबन सेा ठान्यौ॥ २॥
अबको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यौ जेसे पान्यौ।
परमानंद मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यौ॥ ३॥

ऐसे पद परमानंददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कों पोढायें। तब अनोसर करि आप नीचे पधारे। तब परमानंददास हू नीचें आय बैठे। तब रामदास भीतरया नें परमानंददास कों महाप्रसाद दूध पठायेा। सेा दूध परमानंददास जी लेवे लागे तब तातेा लाग्यौ तब परमानंददास जी नें सीरेा करि कें लीयेा। ता पाछें रामदास नें पूछेा जेा तुमकेा महाप्रसाद दूध पठायेा हेा सेा आयेा। तब परमानंददास ने कही जेा हाँ आयेा परि दूध बहुत तातेा हुतेा सेा ऐसेा दूध श्रीठाकुर जी केसें आरेागत हें तातें दूध तेा सुहावतेा भलेा। तब रामदास ने कह्यौ जेा बहुत आछेा आप भगवदीय हेा जेसे आज्ञा करेागे तेसे करेंगे। तब सकारें सब सेवक ध्यान करि कें श्रीगेावर्द्धन नाथ जी की सेवा में तत्पर भये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगेावर्द्धन नाथ जी कों जगायें। तब वा समय परमानंददास जो जाय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे कों पद गायेा। सेा पद।

---

१ क्यों। २ सैन।

राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करों नित्य नेम मेरौ ॥ १ ॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुंजत अंग पंकज वन जागियै भगवान ॥ २ ॥
द्वारे ठाड़े बंदीजन करत हैं पुकार।
वंस प्रसंग गावत हरिलीला सार ॥ ३ ॥
परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप ॥ ४ ॥

यह पद परमानंद ने गायौ। फिर कलेऊ को पद गायौ। सेा पद।

राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ ॥१॥
अरी मैया गैया एक बन ब्याय रही हैं बछरा उहाँहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनो अरबराय कोउ सखा न बुलायौ ॥२॥
चकत भई नंद जू की रानी सत्य आय किधों अपनेां पायौ।
फूलेा न अंग समात रसवर त्रिभुवन पति सिर छत्र जेा छायौ ॥३॥
मिलि बेठे संकेत सघन वन विविध भाँति कीयौ मन भायौ।
परमानंद सयानो ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्यायौ ॥ ४ ॥

ऐसे पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानंददास नें श्रीगोवर्द्धन

नाथ जी सों पूछी जो आप तातो दूध क्यों आरोगत हो। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो ये हमको समर्पत है सो आरोगत है। ता पाछें परमानंददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयो सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सों कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुंदर हैं ताते तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जो जैसे हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करें। तब राजा नें कहो जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नहीं। तब राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज में तो रानी सों बहुत कहत हों परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावो तो वह करै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहाँ ले आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पौर के किवाड़ खोल दिये। सो सब भीर दौर के रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और बहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सों कहो जो मेने तोसों पहिले ही कह्यौ हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे कों परदा है। ये व्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यौ नाहीं। तब वा समय परमानंददास जी ने पद गायौ।

राग देवगंधार

"कोनि यह खेलवे की वानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि" ॥१॥

यह एक तुक परमानंददास जी नें गाई हुती। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानंददास ऐसे कहौ जो 'भली यह खेलवे की वानि'। तब परमानंददास जी नें ऐसौ ही पद गायौ। सो पद ॥

राग देवगंधार

भली यह खेलवे की वानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥१॥
अपने हाथ ले देत है चनवर दूध दही घृत सानि ॥
जो वरजो तो आँख दिखावै पर धन कों दिन दान ॥२॥
सुनि रो जसोधा सुत के करतब पहले माँट मथानि ॥
फोरि डारि दधि डारि आजर[1] में कौन सहै नित हानि ॥३॥
ठाडो देखत नंद जू की रानी मूंदि कमल मुख हानि ॥
परमानंददास जानत हैं बोलि बूझि धों आनि ॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें कितेक पद गाये। जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानंददास नें गायौ।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुंभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानंद जी जहाँ रहत हुते तहाँ आये। सो

१ अजर।

भगवदीय आये जानि कें परमानंददास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो बडो भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयो है । सो काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं । तातें भगवदीय की कृपा होय तो श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें । जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्योछावरि करो । जब यह बिचार कें परमानंददास ने ऐसे ही पद कह्यो । सो पद ।

राग हमीर

आये मेरे नंद नंदन के प्यारे ॥
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे ॥१॥
प्रेम सहत बसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे ॥
हृदय कमल के मध्य बिराजत श्रीब्रजराज दुलारे ॥२॥
कहा जानों कौन पुण्य प्रगट भयो मेरे घर जो पधारे ॥
परमानंद प्रभु करी न्योछावर वारंवार हों वारे ॥३॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आये भगवदीयन कों विदा किये । ता पाछें ऐसी रीति सों परमानंददास नें श्रीनाथ जी की भली भाँति सो सेवा कीनी । सो वे परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ६९ ॥

अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सेा वे कुंभनदास जी श्रीगेावर्द्धन पर्वत के पास जमुनावतेा गांव है तामें रहते। सेा जमुनावतेा नाम वा गाँव को काहे ते है जेा जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प में याके निकट हुतेा ताते जमुनावतेा नाम वा गाँव को है। तामें कुंभनदास जी रहते और परासेाली चंदसरेावर के ऊपर उन कुंभनदास जी की धरती हुती सेा वहाँ खेती करते। सेा कुंभनदास जी श्रीगेावर्द्धन नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सेा अब ही श्रीगेावर्द्धन नाथ जी प्रगट हेाय के श्रीमहाप्रभू जी को बुलावेंगे तब ये भगवदीय प्रसिद्ध हेायंगे।

सेा एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा करत झारखंड में पधारे। सेा झारखंड में श्रीगेावर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा दीनी जेा हम गेावर्द्धन में तीन दमन हैं नागदमन इन्द्रदमन देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सेा मेरेा नाम है। ताते तुम आयके हमकेां पधरावेा और हमारी सेवा को पुकार पगट करेा। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहाँ ही राखि कें बेग पधारे। तब दामेादरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गेाविंद दुबे, जगन्नाथ जेासी, रामदास ये पाँच वैष्णव संग हुते। सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीगेावर्द्धन की तरहटी आय

कें सद्दू पाँडे के चोतरा ऊपर विराजे। सेा आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पाँडे भवानी नरो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकी श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सेांपी। और ब्रजवासी ब्रज में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुंभनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आये।

सेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को एक छोटा सेा मंदिर सिद्धि करवायेा। तामें श्रीनाथ जी कों पधराये और रामदास चोहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। और सब ब्रजवासी लेाग दूध दही माखन लावते सेा श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते। और रामदास कों जेा भगवदीच्छा तें जेा आप प्राप्त होय सेा भेाग धरते और आप प्रसाद लेते। और जेा ब्रजवासी लेाग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जेा यह मेरेा सर्वस्व है सेा तुम सब बातन सेां यत्न राखियेा और सेवा में तत्पर रहियेा। और कुंभनदास कों और सब सेवकन कों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जेा तुम देवदमन के दर्शन किये बिना महाप्रसाद मति लीजियेा। तब या भाँति सेां आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड में राखी हुती। अब कुंभनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तेा श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन कों आवते। सेा कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें

कुंभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म संबंध करवायौ। तब कुंभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी को सुनावते। और श्रीनाथ जी कुंभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्रीडा करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कंभनदास जी के ऊपर करते। अब रामदास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा करन लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयो। सो यहाँ मानिकचंद पांडे, सद्दू पांडे, रामदास चौहान, कुंभनदास सब मिलि कें बिचार कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कहा कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछनों, अपनो बिचारयौ कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछो जो महाराज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हमको यहाँ ते ले चलों हम यहाँ ते उठेंगे। तब सबन नें पूछो जो महाराज कहाँ पधारोगे। तब आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोड के घने में चलेंगे। तब एक भैसा मंगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को बैठाये। तब एक ओर ते तो रामदास पकरें रहे और एक ओर ते कुंभनदास पकरे रहै और सब सेवक संग चलें जात है। तहाँ घने में काँटे बहुत हुते सो उहाँ काँटेन में बैठे सो बस्त्र सबन के फटि गये और सरीर में काँटे लगे दुःख बहुत पायौ। सो घने में एक तालाब हुतो तहाँ रूखन को एक चौक है तहाँ बड़े रूख नीचे श्रीनाथ जी बिराजे। सो कछूक सामग्री संग्रह हुती सो रामदास ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्णव

बैठे। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें कुंभनदास सों कह्यौ जो कुंभनदास जी कछू गावौ। तब कुंभनदास जी तौ मन में कुढ रहे हुते तब एक पद नयो करि कें गायो ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भावत है तोय टोड को घनौ ॥
कांटे लगे गोखरू बूढे फट्यौ जात यह तनौ ॥१॥

सिहों कहा लोकटी को डर यह कहा वानक बन्यौ ॥
कुंभनदास प्रभू तुम गोवर्द्धनधर वह कोन रांड छेडनीको जन्यौ ॥

यह पद कुंभनदास ने गायौ। सो सुनि के श्रीनाथ जी मुसिक्याय कें चुप करि रहे। इतने में श्रीगोवर्द्धन ते समाचार आये जो यह मलेच्छ की फोज आई हुती सो पाछो फिर गई। तब श्रीगोवर्द्धननाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे ॥

प्रसंग २

अब श्रीनाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। सो ब्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयौ जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप ते सब मिटि गयौ। तब कुंभनदास जी प्रसन्न होय के पद गाये सोपद श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को सुनायै। राग श्रीचर्चरी ॥ "जयति जयति हरिदास सर्वधर नें"॥ यह पद सम्पूरण करि कें गायौ पाछें और पद गाये सो पद ॥ राग सारंग "कृष्ण तंनतरया तीर" यह पद सम्पूरण करि

कें कुंभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी देव दमन को सुनावते ।

तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो सब लोग इनके पद गावते। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख्यौ सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुंभनदास जी को पद कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति को चित्त वा पद में गड़ गयौ और माथो धुनौ जो ऐसेहू महापुरुष ह्वै गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कलामत ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति बहुत प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहाँ हैं । तब वा कलामत से कही जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गाँव है तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावौ हम उन्सों मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारो कुम्भनदास के बुलायवे कों भेजे । तब कुम्भनदास जी तो घर हुते परासोली में बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये । तब कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हो।[1] तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या में कछू देशाधिपति को चाकर तौ नाहीं मेरो देशाधिपति सों कहा काम है। तब देशाधिपति के मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तौ काम कछू समझत नाहीं परि हमको देशाधिपति को हुक्म है जो कुम्भनदास कों ले आवौ, तातें यह पालकी है यह घोडा है जापर चाहौ ता पर बैठि कें

१ तब कुम्भनदास सों कह्यौ जो तुमकों पातसाह नें याद कीयो है ।

चलियै, हम तो आये हैं सेा आपको ले जायंगे। तब कुम्भनदास नें मन में विचार कीयैा जेा बिन जाये तौ निर्वाह न होयगौ सेा कुम्भनदास जी तत्काल उहाँ तें पनहिं पहिर कें चले।

तब कुम्भनदास जी कों लेवे को आये हुते तिनने कहीं जेा बाबा सवारी में बेठिये। तब कुम्भनदास ने कह्यो जेा भैय्या में तौ कबहूँ बेठ्यौ नाहीं। पाऊँ ऐसे ही चले। सेा फतह [1]पुर सीकरी आय पहुँचे। सेा देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सेां कह्यौ जेा कुम्भनदास जी आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सेां कही जेा कुम्भनदास जी आवेा बेठेा। सेा आय बेठे। सेा वह स्थल कैसेा है जामें जडाव की रावटी, तामें मेातीन की झालरी लगी है ऐसेा स्थल है, तामें बेठे। तब मन में बहुत दुःख लाग्यौ और कह्यौ जेा यासेा तेा हमारे व्रज के हाँसन के रूख आछे हैं सेा जिनमें श्रीगेावर्द्धन नाथ जी खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बेाल्यौ जेा कुभनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीये हैं सेा मेंने तुमकेा बुलायेा है ताते तुम कछू विसनपद गावेा। तब कुम्भनदास जी तेा मन में कुढे हुते जेा विचारें जेा कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तौ श्रीगेावर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरेा काम चलेगेा नाहीं ताते ऐसेा गाऊँ जेा कबहूँ मेरेा नाम न लेय। काहे ते जेा याके संग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कटेार वचन कहूँ जेा बुरेा मानेगेां तेा कहा करेगेा। तब यह मन में आई "जेा जाकेा मन मेाहन संग करे एकेा के सब से नहीं

[1] फ़ते।

सिरने जो जग वैर परे"। यह विचारि के ता समय कुम्भनदास जी ने एक नयौ पद करि कैं गायौ ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन कौं कहा सीकरी काम।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम।
कुंभनदास लाल गिरधर बिन यह सब झूठौ धाम ॥ २ ॥

यह पद गायौ सो देशाधिपति अपने मन में बहुत कुस्यौ[1] और कह्यो। जो इनको काहू बात को लालच होय तो मेरो जस गावें इनकों तो अपने परमेश्वर सों साँचो सनेह है। इतनों कहि कें देशाधिपति नें कुंभनदास कों सीख दीनो। तब कुंभनदास जी उहाँ ते चले सो मार्ग में आवत अति क्लेश जो कब हों प्रभून कों श्रीमुख देखों। सो ऐसो विचार के कुंभनदास जी आवत हैं ता समय पद गायौ। सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहू देख हों इन नैननु।
सुंदर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख देननु ॥ १ ॥
वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैननु।
हँसि हँसि हरखि पतौवन पावन बाँटि बाँटि पय फेननु ॥ २ ॥
कुंभनदास किते दिन बीते किये रेणु सुख सेननु।
अब गिरधर बिन निस और वासर मन न रहत क्यों चेननु ॥४॥

---

१ कुड्यौ।

यह पद मार्ग में गावत आये। सेा आपकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कियै। और देाय दिन लेा दर्शन न भये सेा कुंभनदास जी कों देाय जुग की बराबर बीतेा। सेा श्रीमुख देखते ही सब दुःख बिसर गयौ। तब एक पद गायौ। सेा पद॥

राग धनाश्री

नैन भरि देखेा नंदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयौ हेां बिसर्यौ पन परवार॥ १॥
बिन देखे हेां विकल भयेा हेां अंग अंग सब हारि।
ताते सुधि है सावरो मूरति की लेाचन भरि भरि वारि॥ २॥
रूप रास पैमित[1] नहीं मानेां कैसें मिसे लेा कन्हाई।
कुंभनदास प्रभू गोवर्धन धर मिलियै बहुर री माई॥ ३॥

राग धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लियै देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥ १॥
धर्म जाउ अरु लेाग हँसेा सब अरु गावो कुल गारी।
सेा क्येां रहे ताहि बिन देखे जेा जाकेा हितकारी॥ २॥
रस लुब्धक निमखन छांड़त ज्येां आधीन मृग गानेां।
कुंभदास सनेह परम श्रीगेावर्द्धन धर जानेां॥ ३॥

ऐसे पद बहुत कुंभनदास जी नें गाये। सेा सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ "यह मेा बिन रहत नाहीं"।

---

1 परिमित।

प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करिके अपने देस कूं चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आये हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनों। सो यह विचार कें आगरे ते चले सो मथुरा आये। तब विश्रांत स्नान करिकें श्रीकेसो-राय जी के दर्शन करिकें वृन्दावन चले। सो उष्णकाल के दिन हुते तब वृन्दावन के सब महंतन ने जानी जो आज यहाँ राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकुर जी कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरण पहराये पिछवाई चंदोवा सब जरीन के बाधें। इतने में राजा मानसिंह दर्शन को आयो। सो भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कीये। सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता समय राजा मानसिंह पै ठाडो न रह्यो गयो। सो ऐसे दर्शन चार पाँच जगह खड़े हुते। सो तहाँ सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते बिदा होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरा आय कें मन में बिचारे जो अबही कूंच करें।

सो वहाँ सो असवार होय कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्धन गाँव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीये। सो तहाँ श्रीहरदेव जी के दर्शन किये। सो वहाँ वृन्दावन के महंतन ने बड़े ठाठ बनाये हैं तैसोई यहाँ ठाठ बनाय राख्यो हुतो। सो राजा मानसिंग तहाँ ते दर्शन करि के चले। तब काहू ने कही जो महाराज यहाँ श्रीगोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आए दर्शन कों

चलो। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब व्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने। तब तहाँ ते चले। सो गोपालपुर गाँव आये। तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे। तह यह सुनि कें राजा मानसिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों गिरराज ऊपर आये। सो उष्णकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आये, सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयो हुतो। इतने में भोग के दर्शन खुले सो राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गये।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सों होत हुती। बड़ौ मंदिर सिद्धि भयो हुतो। श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयो हुतो। निज मंदिर मणि कोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते। सो ता समय राजा मानसिंह दर्शन कों गये हुते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतो सो सीतलताई भई। बड़ो चेन भयो। और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कों श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयो और कह्यौ जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोवर्द्धन नाथ जी हैं। आगें श्रीभागवत में सुन्यौ हुतो सो आज देखे। आज को दिन है सो धन्य है और आज मेरे बड़ौ भाग्य हैं। और मन में कह्यौ जो यह भोग को समय है सो तौ प्रभून की राजधानी को समय है। सो वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है। सो कुंभनदास जी ठाड़े ठाड़े

मणि कोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं। सो राजा मानसिंग को मन वा पद में गड गयौ हुतौ। तेसोई कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और तेसोई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते। सो पद ॥

राग नट

रूप देख नेना एल लागै नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तही ॥१॥
कहा कहौ कछू कहत न आवै चित्त चोरयो[1] माँगवै दही ॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सेां कही ॥२॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरयौ है ॥
हौं ग्रह अपने सचु सेां बैठी निरखि वदन अस्वरा विसरयौ है ॥१॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरयौ है ॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरयौ है ॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत है। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तब राजा मानसिंग दंडौत करि कें अपने डेरा में गयौ। तब कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करि कें अपनी सेवा सेां पहुँच कें अपने घर कों गये। तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

१ चाख्यौ।

श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत। तब काहू ने कह्यो जो महाराज एक व्रजवासी है, कुंभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सों मिले हुते सो है। तब राजा मानसिंग ने कही जो हम हू इनसों मिलैं तो आछौ।

तब राजा मानसिंघ सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आये। सो परासोली में कुम्भनदास जी न्हाय कें बैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहे जो कुम्भनदास जी हों तो एक बात कहूँगो। तब इतने में राजा मानसिंग आयौ सो कुंभनदास जी को प्रणाम करि कें बैठो और श्रीनाथ जी तो उहाँ ते दूर जाय ठाडे भये। सो श्री-नाथ जी तो एक कुम्भनदास जी को देखे है और इनकी भतीजी को देखे हैं। तब कुंभनदास जी की दृष्टी तो श्रीनाथ जी के संग ही गई सो श्रीनाथ जी बैठे हैं तहाँ कुम्भनदास जी देखवो करे। तब भतीजी बोली जो बाबा राजा बैठे हैं। तब कुंभनदास जी ने कही जो में कहा करूँ जो बैठे हैं। तो जा[1] बात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अब कहंगे। तब दूर ते श्रीनाथ जी कहैं जो कुम्भनदास में बात कहूँगो। तब कुंभनदास जी प्रसन्न भये और भतीजी सों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करों। तब भतीजी ने कही जो बाबा आरसी तो पडिया पी गई। तब राजा ने कुम्भनदास जी की भतीजी सों कही जो अरी छोरी पडिया

[1] जो।

कहा पी गई। तब वह कठौटी में पानी लाय के कुंभनदास जी के आगें धरयौ तब कुम्भनदास जी वा में देखि कें तिलक करन लागें।

इतने में राजा मानसिंग ने अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बाबा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुंभनदास जी बोले जो अरे भैय्या याको हौं कहा करूँगो, हमारे तौ यहाँ छानि के घर हैं ताते कोऊ या के पाछें हमारो जीव लेवगो ताते हमें तौ यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंग ने इनके आगें सोने की थैली धरी। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो भैया हमकौ धन तौ चाहिये नाहीं हमारे तौ यह खेती है ताको धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिंग ने कह्यौ जो भलो आपको गाम है ताको लिखो है[1] करि देउ। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैया हौं तौ ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउं। तब फेरि राजा मानसिंग ने कह्यौ जो बाबा कछु तौ आज्ञा करो। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो हमारो कह्यौ करोगे। तब राजा मानसिंग नें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहौगे सो करूँगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मत आइयौ। तब राजा मानसिंग नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, यह माया के भक्त तौ सगरी पृथ्वी में फिरे सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तौ एक एही देखे। यह कहि कें राजा मानसिंग कुंभनदास कौं दंडौत करि कें उठि चल्यो। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सों

१ हों।

श्रीनाथ जी ने वह बात कही और बहुत प्रसन्न भयौ। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भयै।

प्रसंग ४

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों वृन्दावन के महंत हरिवंश भूत आयै। सेा यह जानि कें आयै सेा महापुरुष है, इनसों श्रीठाकुर जी बोलत हैं, बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सेा कीर्तन बहुत सुन्दर कीयै, ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सेा मिलवै आयै। सेा कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जेा कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीयै सेा हमनें आप कें सुने हैं, और आप कें पद श्रीस्वामिनी जी कौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोइ स्वामिनी जी कौ पद सुनावौ। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी कें पद करि कें गायौ॥ सेा पद॥

राग रामकली

ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य
की वा वदन पर कोटिस[1] चंद्रवारौ॥
खंजन कुरंग सत कोटि जंघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योंछावर उतारौ।

१ कोटिसत।

मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारों ॥१॥
कोर दश कोटि दशनन परि कहिन वारों
पंक कंदूरवहू कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारों ॥
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारों ॥२॥
दासकुंभन स्वामिनी सुनखसिख
अति अद्भुत सुठान कहा लगि समारों ॥
लाल गिरधर कहत मोहितो
हिलोजी[1] वह रूप छिन छिन निहारों ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायो सो सुनि के महंत बहुत ही रीझे और कहें जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि वहाँ उपमा दीनी ही और वारि फेरि डारी ताते कुंभनदास जी आप बड़े महापुरुष हैं आपकी सराहना कहाँ ताँई करिये। वा महंत नें कुम्भनदास की बड़ी बड़ाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदास जी सो बिदा होयकें अपने घर गये।

प्रसंग ५

और एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल में अपने घरते श्री-नवनीत प्रिया जी सों आज्ञा माँगि कें विदेसार्थ[2] द्वारिका कों

१ तोहिलोंजी। २ विदेशार्थ।

पधारे। सेा श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारि पधारे। सेा श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार कियै ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर बिराजे। तब सब सेवक दर्शन कों आये। तब बात चलत में कुम्भनदास की बात चली। तब काहू वैष्णव नें कह्यौ जेा महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तेा एक खेती की है ताकेा धन आवत है तासें निरवाह करत हैं। सेा यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन कों आये तब श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सें कहे जेा कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन को पधारेंगे और विदेसहू होयगेा। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यो है ताते जेा तुम संग चलेा तेा विदेस में भगवदीय कौ ग्रहकाल बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हेा जाय कछु जान्यौ न परै। और में सुन्यौ है जेा कछू तुम्हारें द्रव्य कौ संकोच है सेा वहाँ सिद्धि होयगेा ताते सर्वथा तुमकौ चल्यौ चाहियै। तब कुंभनदास जी नें कही जेा आज्ञा। इतने में दर्शन कौ समय भयेा सेा श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सें पहुँचिकें श्रीनाथ जी कौ पौढाय कें बैठक में पधारे और कुम्भनदास जी कौ सीख दीनी जेा कुंभनदास जी तुम सेवा सौ पहुँचि कें वेग आईयेा हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

तब कुंभनदास जी श्रीगुसाईं जी कों दंडोत करिकें अपने घर कों आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आये और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मांगि कें आप नीचे आये। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछें समयें ताही कौ[1] महूर्त हुतौ सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आये। सोई अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढ़े। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ बैठि के बिचारत हुते। कहियै जो कहिवे की होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह बिचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुंभनदास जी कूं दर्शन की सुधि आई सो वहाँ पंछरी की ओर कोनें में जाय कें बैठि कीर्तन गावत है और आंखिन में ते जल को प्रवाह बहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग सारंग

केते है जुग रो बिन देखें।
तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठति मुख रेखें॥ १॥
वह शोभा वह कांति बदन की कोटिक चंद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥ २॥

1 ताही समय को।

श्याम सुन्दर संग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें ।
कुंभनदास लाल गिरधर विन जीवन जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह पद कुम्भनदास नें गायो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों । सो कुंभनदास जी कों कलेश श्रीगुसाईं जी सों सह्यो न गयो । सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यो जो कुम्भनदास अब तुम बेगि जाउ तुम्हारो विदेस होय चुक्यो । और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है । कैसें जानियें । जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन कों पान लेवे कों पठायो । सो गज्जन कों तों भगवद् आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यो जाय । सो गज्जन धावन पान लेवे कों बाहिर गये । सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयो । सो मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी कों भोग समर्प्यो । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यो तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सों कह्यो जो मेरो गज्जन धावन कहाँ है । तब श्रीअक्का जी नें कह्यो जो वह तो पान लेवे को गयो है । तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यो जो मेरो गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूंगी । सो श्रीहस्त खेंच कें बेठ रहे । तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायो । तब गज्जन धावन नें कही जो बावा आरोगो तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं । यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय । और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं । श्लोक ॥ ये यथा मां प्रपद्यंतेस्तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ यह आधो श्लोक कह्यो ।

ताते श्रीमुख सों कहैं जो इहां तुम्हारी बिवस्था और उनकी बिवस्था है। सो ऐसो कुंभनदास कों और श्रीनाथ जी कों बिरह हुतो। ताते श्रीगुसाईं जी नें कुम्भनदास कों सीख दीनी। तब कुंभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीये। तब कुम्भनदास ने एक पद गायो। सो पद॥

राग सारंग

जो ये चौंप मिलन की होय॥

तौ क्यों रहै ताहि बिन देखें लाख करौ जिन कोय॥
जो ये बिरह परस्पर व्यापै जो कछू जीवन बनै॥
लोक लाज कुलको मर्यादा एकौ चित्त न गनै॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी और न कछू सुहाय॥
गिरधर लाल तोहि बिन देखे छिन छिन कलप बिहाय॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायो। सो सुनि कें श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये। सो कुंभनदास श्रीनाथ जी कों देख कें प्रसन्न भये॥

प्रसंग ६

और एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसाइ जी के पास बैठे हुते। तब कुम्भनदास नें श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज बेटा डेढ है और हे तो साथ[2]। तब श्रीगुसाईं जी नें कह्यौ जो कुम्भनदास डेढ कौ कारन कहा। तब फेरि कुम्भनदास जी कहैं जो महाराज आखो बेटा तौ चत्रभुजदास और आधो बेटा

१ जाहि। २ सात।

कृष्णदास हैं। सेा श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासेां आधेा है । कुंभनदास जी कृष्णदास सेां आधेा क्यों कहैं ताको हेत यह जेा श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रगट कीयेा है। सेा पुष्टि मार्ग कहा है जेा व्रज भक्तन को हेत यह मार्ग प्रगट कीयेा है। सेा भगवदीय गाये हैं 'जेा सेवा रीति प्रीत व्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सेा व्रज भक्तन की कहा रीति है जेा श्रीठाकुर जी के सन्निधान तेा सेवा करें और श्रीठाकुर जी वन में पधारे तब गुणगान करें। जेा ये वस्तु होय तेा आखेा और इनमें एक होय तेा आधेा। तातें चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है तातें आखेा और कृष्णदास में एक सेवा है सेा आधेा। तब श्रीगुसांई जी श्रीमुख ते कहैं जेा भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भये तेा कोन काम के। यह चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं॥ वैष्णव ९०॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सेा वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[1] हुते। श्रीगुसाईं जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सेा कृष्णदास श्रीनाथ जी को गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सेां पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सेा सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सेा एक गाय चराय कें पूछरी के पेार[2] कृष्णदास गायन के संग आवत हुते। सेा सगरी गाय तेा खिरक में आई और गाय बड़ी हुती ताकों औन[3] बहुत भारी हुती सेा

१ ग्वार। २ पूछरी की ओर। ३ ऐन।

वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो वा गाय कों आवत अँधियारो परि गयो। सो तहाँ पर्वत के नीचे अधियारे में एक नाहर निकस्यौ सो गाय पै दोरयौ। तब कृष्णदास कहैं जो अरे अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखो हो तो मेरे ऊपर आऊ। तब इतने में गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर नें कृष्णदास को अपराध कीयो।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक में आई। तब श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे कों आये। सो सब गाय ग्वाल दुहत हैं और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय कों श्री[1] दुहिब कों बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह गाय बछरा[2] कों चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुंभनदास जी को भये। ता पाछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मंदिर में पधारे। तब श्रीगुसाईं जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास जी खिरक में से आये सो दंडौती सिला पास ठाडे भये। इतने में समाचार आयो जो कृष्णदास को नाहर ने मारयौ। सो सुनि कें कुम्भनदास कों मूर्छा खाय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसंधान भूल गयो। तब कुंभनदास जी कौ सब कोऊ बुलावे परि बोले नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाईं जी सो कहे जो महाराज कृष्णदास को नाहर नें मारयो और गायकों कृष्णदास ने बचाई सो कृष्णदास उहाँ ही परे हैं। तब गुसाईं जी कहैं जो गाय कबहू न छोडि आवै। अंत समय गाय संकल्प करत है ताको

१ श्रीनाथ जी। २ बछरा।

गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तो श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास कों गाय कैसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुंभनदास जी कहाँ है। तब काहू वैष्णवनें कही जो महाराज कुम्भनदास जी कों कलेश बहुत बाधा कियो है। जो कुम्भनदास जी ऊपर आवत हुते, सो कुम्भनदास जी के आगें काहू नें कृष्णदास के समाचार कहैं, सो सुनत ही कुम्भन दास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो फेरि कुम्भन-दास जी की खबर लावो जो कुम्भनदास जी की देह कैसें हैं। सो वे आय कें कुंभनदास जी कों पुकारें। तब ये समाचार श्रीगुसाईं जी सों कहैं जो महाराज कुम्भनदास जी तौ कछू सम-झत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तौ सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पेढाय कें आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के साम्हैं कुम्भनदास जी परे हैं और लोग चारयौ ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदास जी कैसे भगवदी हैं परि पुत्र को सोक बहुत बुरे होत है, या पीरा सों कोई बच्यो नाहीं, काहे ते जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनि कें श्रीगुसाईं जी मन में विचारे जो यहाँ तौ कारण कछू और है और लोगन कों तौ कछू और भाखत है। ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कही जो कुम्भनदास जी सवारे तुम वेगी

आईयो तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[1] तुम मन में खेद मति करो। इतनो श्रीगुसाईं जी श्रीमुख सों कहैं तब कुंभनदास जी उठि ठाढ़े भये और प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांई जी कों दंडौत करिकें कुम्भनदास को जो कार्य करनों हो सो सब कीयो।

पाछें सवारे कुंभनदास जी दर्शन कों आये। श्रीनाथ जी कों सिंगार करिके श्रीगुसाईं जी सों कह्यो जो प्रथम कुम्भनदास जी कों दर्शन कराउ देय। सो कुम्भनदास जी वैष्णवन के ऊपर यह कार कियो जो सूतकी को कोंन मंदिर में जान देतो। सो कुम्भनदास जी के अनुग्रहतें सब कोउ दर्शन करत हैं। सो कुंभनदास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बैठते। सो वहाँ बैठे बैठे विरह के पद गावते। सो पद ॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल।
अति आतुर व्रज सुन्दर प्यारे विरही बेहाल ॥ १ ॥
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल।
चंदन कुसुम सुहाय घनसार लगन वदी[2] ज्वाल ॥ २ ॥
कुम्भनदास प्रभूनवधन तुम बिन कनकलता मानों सूषी
जीव मा[3] काल।
अधरामृत वंशी सींचि लेउ तुम गिरि गोवर्द्धन लाल ॥ ३ ॥

१करावेंगे। २ वडी। ३ भां।

राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये।
तब ते निघतट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गयै।
यह जानियै बिधाता जुग सम कीने जाम नयै।
जागत जाग विहातन के ऐसें प्रीत पठयै[1]।
ब्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच लयै।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पयै।
कुम्भनदास बिछुरत नंदनंदन बहुत संताप करे।
अब गिरधर विन रहत निरंतर नैात न नीर छयै॥

राग केदारो

औरन कों समीप बिछुरनों आयो मेरी हिसा।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा॥
ना जानों यह बिधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसो कौन रिसा।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रह ज्यों चातक घन त्रिसा॥

ऐसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद कियें। पाछें शुद्ध होय कें कुंभनदास जी भगवत्सेवा में आयै। ऐसी जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये॥ प्र० १॥

---

१ छये।

श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

नंददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हते। सेा विनकूं नाच तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को शोंक बहुत हतेा। सेा वा देश सूं एक संग द्वारका जात हतेा। सेा नंददास जी ऐंसे विचारे कें में श्रीरणछोड जी कें दर्शन कूं जाऊँ तेा अच्छेा है। जब विन नें तुलसीदास जी सूं पूँछी। तब तुलसीदास जी श्रीरामचंद्र जी के अनन्य भक्त हते जासूं विन नें द्वारका जायवे की नाहीं कही। जब नंददास जी नहीं माने सेा वा संग में चले गये। सेा मथुरा सूधे गये। मथुरा में वा संग कूं बहुत दिन लगे सेा नंद-दास जी संग कूं छोड़कर चल दीने।

सेा नंददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सेा कुरुक्षेत्र की आड़ी सीनंद गाम में जाय पहुँचे। सेा वहाँ एक साहुकार क्षत्री रहतेा हतेा। तब नंददास जी बाके घर भिक्षा लेवे गये। वाकी स्त्री को रूप सुन्दर हतेा सेा नंददास जी देखकर मोहित होय गये। जब आखेा दिन जाय कें वाके दरवाजे पें बैठ रहते, जब वा छत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐंसे करते बहुत दिन बीते।

जब वा क्षत्रानी की जात में बहुत चर्चा फेली तब वा क्षत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम में रहनो नहीं। तब उहाँ ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कूं चले कारण कें सब वैष्णव हते। तब नंददास जी कूं खबर भई तब नंददास जी हूँ विन के पाछें गये। रस्ता में विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेरा करें। ऐसे कितने दिन पीछे ब्रज में पहुँचे। सेा यमुना जी उतरवे के समय वा क्षत्री नें कछू मलाहन कूं दीनो और ये कही कें या ब्राह्मण कूं मती उतारो ये हमकूं दुःख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मण कूं यमुना जी के पार क्यों बैठाय आये हो। तब वा क्षत्री के मन में ऐसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सेा क्षत्री मन में बहुत पछतायवे लग्यो।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कूं पार सें बुलाय लीनो। जब वा नंददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नंददास जी नें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोर कें ठाडे रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा क्षत्रानी के नेत्रन में नंददास जी कूं होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नंददास जी को मन वहाँ ते छूटकें साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद में लग्यो। तब नंददास जी हाथ जोर कें ठाढे रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीनवनीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नंददास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णवन कुं पातर धराई। तब नंददास जी महाप्रसाद लेवे बैठे। तब महाप्रसाद लेत ही नंददास जी कुं देहानुसंधान रह्यौ नहीं। जब पातर पर बैठेई रहे। भगवल्लीला में मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान को अनुभव होवे लग्यो। भरे घर के चोर की सी नाईं मोहित भये। ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसाईं जी पधार कें नंददास जी के कान में कही कें नंददास जी उठो दर्शन करो। जब नंददास जी उठके ठाढ़े भये। तब नंददास जी नें उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समय श्रीवल्लभसुत को उठतहिं रसना लीजिये नाम' इत्यादिक पद गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्लीला की स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपाल ललन कों मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला संबंधी बहुत नये करिके गाये।

सो नंददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी तब सब ठिकानेन सों चितको मन खींचकें श्रीप्रभुन में लगाय दीनो। सो वे क्षत्री की बहू जिनसों नंददास जी को मन लाग्यो हतो सो वे क्षत्री की बहू नंददास जी कुं रास्ता में पाँच सात वार नित्य दीखती हती परन्तु नंददास जी वाकी ओडी देखते ही न

हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासूं इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सो नंददास जी कुं आज्ञा करकें संग ले गये। तब नंददास जी नें जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सो साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सो दर्शन करकें नंददास जी बहुत प्रसन्न भये और नंददास जी कुं किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा पायकें यह पद गायो, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललना केसे लोयन लोने'। यह पद गायकें अपने मन में नंददास जी नें बड़े भाग्य माने। फिर संध्या आरती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

बनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥
बनते आवत गावत गौरी ॥ २ ॥
देख सेखी हरि को वदन सरोज ॥ ३ ॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
आवत गोकुल की नारी ॥ ४ ॥

या भाँत सूं नंददास जी ने इत्यादि अनेक पद गाये।

सेा नंददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते । जिनकूं संसार ऐसेा फीको लागतेा जैसे मनुष्य कूं उल्टी देखके बुरेा लगे । जासूं वे और ठिकाने जाते नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगिरिराज जी और श्रीयमुना जी और श्रीव्रजभूमी इनकेा स्वरूप विचारयेा करते । प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनकेा मन नहीं लागतेा हुतेा । जासूं विननें श्रीस्वामिनी जी के स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुंवरकार सखी भेष कीजे' । या पद में कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनीजे कोई । प्यारी के पायन आज आन परे सेाई' । ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हती ।

प्रसंग ३

सेा वे नंददास जी व्रज छेाड़ के कहूँ जाते नहीं हुते । सेा नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते । सेा विननें सुन्येा नंददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं । तब तुलसीदास जी के मन में ये आई कें नंददास जी नें पतिव्रता धर्म छेाड़ दियेा है आपने तेा श्रीरामचंद्र जी पती हुते । सेा तुलसीदास जी नें ये विचार कें नंददास जी कुं पत्र लिख्यो जेा तुम पतिव्रता धर्म छेाड़कें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी । ये पत्र जब नंददास कुं पहुँचेा तब नंददास जी ने बाँच के यह उत्तर लिख्यो । जेा श्रीरामचन्द्र जी तेा एक पत्नीव्रत हैं सेा दूसरी पत्नीनकुं कैसे संभार सकेंगे । एक पत्नी हुँ बरेाबर संभार न

सके। सेा रावण हर ले गयेा। और श्रीकृष्ण तेा अनंत अबलान के स्वामी हें और जिनकी पत्नी भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है। एक कालावच्छिन्न अनंत पत्नीन कुं सुख देत हें। जासूं मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हें। सेा जानेागे।

ये पत्र जब नंददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकुं मिल्येा। तब तुलसीदास जी नें बात के विचार किया कें नंददास जो को मन वहाँ लग गयो है। सेा वे अब आवेंगे नहीं। सेा उनकी टेक हमसूं अधिको है। हम तेा अयुध्या छेाड़ के काशी में रहे हें और नंददास जी तेा व्रज छेाड़ के कहीं जाय नहीं हें। इनको टेक हमारी टेक सूं बड़ो है। सेा वे नंददास जो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

सेा एक दिन नंददास जी के मन में ऐसी आई जेा जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सेा हमहूँ श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लेागन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सेा ब्राह्मण ने बेानती करी, जेा श्रीमद्भागवत भाषा हेायगेा तेा हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नंददास जी सुं आज्ञा करी जेा तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करेा और ब्राह्मणन के क्लेश में मत परेा, ब्रह्मक्लेश आछेा नहीं है और कीर्तन कर कें व्रजलीला गाओ। जब नंददास जी ने श्रीगुसाईं जो को आज्ञा मानी, श्रीमद्भागवत

भाषा न कर्यो। ऐसेा श्रीगुसांई जी की आज्ञा के विश्वास हतो। ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ५

सेा नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हते। सेा काशी जी ते नंददास जी कूं मिलवे के लियें व्रज में आये। सेा मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नंददास जी की खबर काढ के श्रीगिरिराज जी गये। उहां तुलसीदास जी नंददास जी कुं मिले। जब तुलसीदास जी नें नंददास जी सुं कही कें तुम हमारे संग चलेा, गाम रुचे तेा अयेाध्या में रहेा, पुरी रुचे तेा काशी में रहेा, पर्वत रुचे तेा चित्रकूट में रहेा, वन रुचे तेा दंडकारण्य में रहेा, ऐसे बड़े बड़े धाम श्रीरामचंद्र जी ने पवित्र करे है। तब नंददास जी ने उत्तर देवे कुं ये पद गायेा। सेा पद॥

जेा गिरि रुचे तेा वसेा श्रीगेावर्द्धन,
गाम रुचे तेा वसेा नंदगाम।
नगर रुचे तेा वसेा श्रीमधुपुरी,
सेाभासागर अति अभिराम॥१॥
सरिता रुचे तेा वसेा श्रीयमुनातट
सकल मनेारथ पूरण काम।
नंददास कानन रुचे तेा
वसेा भूमि वृन्दावन धाम॥२॥

यह पद सुनके तुलसीदास जो बेाले जेा ऐंसेा कैान सेा पाप है जेा श्रीरामचंद्र जी के नाम सूं न जाय। जासूं तुम श्रीरामचंद्र

कूं भजो। तब नंददास जो नें एक कीर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें में श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हों तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहुँ न परे चैन
मुखहुँ न आवे बैन तनको दशा कछु और रहो री ॥१॥

जेतेक नेमधर्म व्रत कीने रो में
बहुविध अंगो अंग भई में तो श्रवण मई री।
नंददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत केधों कैसी दई री ॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नंददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कूं गये तब तुलसीदासहुँ उनके पीछें पीछें गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथो नमायो नहीं। तब नंददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी बिना और दूसरे कूं नहीं नमे है। जब नंददास जी नें मन में विचार कीनो यहाँ और श्रीगोकुल में इनकुं श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नंददास जी ने गोवर्द्धननाथ जी सों बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमें, धनुष बाण लेओ हाथ ॥

ये बात सुनकें श्रीनाथ जी कों श्रीगुसाईं जी की कान तें विचार भयो जो श्रीगुसाईं जी के सेवक कहें सो हमकुं मान्यो चाहिये । जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें श्रीरामचंद्र जी को रूप धर के तुलसीदास जी कुं दर्शन दिये, तब तुलसीदास जी नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं साष्टांग दंडवत करी ।

जब तुलसीदास जी दर्शन करके बाहिर आये । तब नंददास जी श्रीगोकुल चले जब तुलसीदास जी हूँ संग संग आये । तब आयकें नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे । साष्टांग दंडवत करी और तुलसीदास जी नें करी नहीं । और नंददास जी कुं तुलसीदास जी नें कही कें जैसे दर्शन तुमनें वहाँ कराये वैसे ही यहाँ कराओ । जब नंददास जी नें श्रीगुसाईं जी सों बीनती करी ये मेरे भाई तुलसीदास है, श्रीरामचंद्र जी बिना और कुं नहीं नमें है । तब श्रीगुसाईं जी नें कहीं कें तुलसीदास जी बैठो । जब श्रीगुसाईं जी के पाँचमें पुत्र श्रीरघुनाथ जी वहाँ ठाढे हुते और विन दिनन में श्रीरघुनाथ जी को विवाह भयो हतो । जब श्रीगुसाईं जी नें कही रघुनाथ जी तुम्हारे सेवक आये हैं, इनकुं दर्शन देवो । तब श्रीरघुनाथ लाल जी नें तथा श्रीजानकी बहू जी नें श्रीरामचंद्र जी को तथा श्रीजानकी जी को स्वरूप धरकें दर्शन दिये । साक्षात् दर्शन भये । तब तुलसीदास जी नें साष्टांग दंडवत करी । याही तें श्रीद्वारकेश जी नें मूलपुरुष में गायो हे, "हेतु निज अभिधान प्रकटे तात आज्ञा मानके ।" और तुलसीदास जी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और पद गायो "वरणों आवधि

गोकुल गाम" ये पद गाय कें तुलसीदास जी बिदा होय के अपने देशकुं गये।

सो वे नंददास जी श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनके कहेतें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं तथा श्रीरघुनाथ जी कुं श्रीरामचंद्र जी को स्वरूप धरके दर्शन देणे पडे। जासूं इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदास के बेटा तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हते। सो एक दिन कुम्भनदास कुं श्रीगोवर्द्धनाथ जी नें चार भुजा धरि के दर्शन दिये। वाही दिन बेटा को जन्म भयो जासूं वा बेटा को नाम चतुर्भुजदास धरयो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता में लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही समय कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवाये। और चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दिन तें चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्ध बालक होय जाय और इच्छा आवे तो बोलवे चालवे सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनदास जी एकांत में बैठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आय जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सामर्थ्य श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास में धर दीनी।

सेा जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कुं साथ खेलवेकुं ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैसे पद गावते। सेा ये चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते।

प्रसंग २

सेा एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजबासी के घर माखन चोरी करवेकुं पधारे और चतुर्भुजदास जी कुं संग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजबासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तेा नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सेा विननें मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जेा महाराज मेाकुं तेा आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जेा तेरे में सामर्थ्य आछी नहीं हती जब तू क्यों न भाग आयेा। सेा वें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। तातें इनकी वार्ता कहा कहिये।

प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकुं प्रथम लीला कें अनुभव भयेा वा दिनतें सर्व व्यापी वैकंठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सेा ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कूं पेाढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सेा पद। "वे देखेा बरन झरेाखन दीपक, हरि पेाढे ऊँची चित्रसारी"। सेा इतनी तुक जब

कुम्भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। "सुन्दर बदन निहारन कारन, बहुत यतन राखे कर प्यारी"। ये सुनिकें कुम्भनदास जी ने निश्चय करयो जेा इनकुं श्रीगुसाईं जी की कृपा सेां संपूर्ण अनुभव भयो। सेा बड़ी दया मान के बहोत प्रसन्न भये। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सेा कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं। ऐसेा जानते जेा श्रीनाथ जी संग खेलत होएंगे। सेा चतुर्भुजदास ऐंसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

प्रसंग ४

और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के शृङ्गार के दर्शन चतुर्भुजदास जी ने कीने और श्रीगुसाईं जी आरती दिखावते हते। ता समें चतुर्भुजदास जी नें ये पद गायो।

"सुभग शृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखावें। आपुन नेक निहारिये बलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आवें"।

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तब एक वैष्णव नें पूछ्या जेा महाराज चतुर्भुजदास जी नें "आज की छवि कछु वरनि न जावै" ऐसे गायो और आपतेा नित्य शृङ्गार करे हैं और आरसी दिखावें है। सेा आज को अभिप्राय कछु समझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सेा चतुर्भुजदास सेां पूछियो। तब वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सेां पूंछी। जब चतुर्भुजदास जी नें और भी पद गायो। सेा पद। "माईरी आज

और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके वा वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सो पूछ्यो जो भगवल्लीला तो नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यों कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पणो येई है जो नित्य है और क्षण क्षण में नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कूं और लीला के दर्शन करवे वारेन कूं क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सो गोपालदास जी नें गायो है। चौथे आख्यान में पांचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसी भगवल्लीला है। ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जो जिनकों नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र होय गयो।

प्रसंग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल बिराजते और श्रीगिरिधर जी सों लेके सब बालक श्रीजी द्वार बिराजते हुते। तब उहाँ रास-धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सों पूंछ के परासोली में रास करायो। और रास में खूब गान भयो। जब चतुर्भुजदास जी सुं श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जो तुम कछु गावो। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जो मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सूं मैं कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुल-नाथ जी ने कही जो श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्रीनाथ जी जाग के और श्रीगिरिधर जी कुं जगाय के श्रीनाथ जी परासोली पधारे और श्रीगिरिधर जी पधारे और चतुर्भुजदास कूं और श्रीगोकुलनाथ जी कूं दर्शन भये । और कोई कुं दर्शन भये नहीं । तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी गावे लगे । जब अधिक सुख भयो रातहुँ बढ गई और चतुर्भुजदास जी नें गायो सोपद । "अद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रंग राचें ।" पद दूसरो । "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान," ऐसे ऐसे चतुर्भुजदास जी नें बहुत पद गाये । जब रास भयो तब परम आनंद भयो ।

फेर श्रीगिरिधर जी नें श्रीनाथ जी कुं रात के जगे जान के सवारे जगाए नहीं । इतने में श्रीगुसाईं जी गोकुल तें पधारे और पूँछी जो कहा समय है । जब श्रीगिरिधर जी नें कही जो श्रीनाथ जी जागे नहीं है । रात कुं रास में जगे हते । जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें हैं और सदैव जगें है जासूं शंखनाद करावो । जब शंखनाद कराय के श्रीनाथ जी कुं जगाए । फेर श्रीगोकुलनाथ जी कुं श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी । जो ऐसो आग्रह करिकें श्रीनाथ जी कुं पधरावने नहीं । एतो सदैव अपनी इच्छा तें रास करत है जासूं बोनती करिकें पधरावने नहीं । वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते के श्रीनाथ जी के विना दूसरे ठिकानें नहीं करत हते ।

प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सेा आज्ञा करी जेा अपछराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कुं बुलाय लावेा और तुम फूल ले आवेा। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कुं बुलाय के आप फूल वीनकें आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा सूं बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार कस्यो जे यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने में चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायेा। "गेावर्द्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियेा पिय प्यारी।" और दूसरेा पद गायेा। "रजनी राज कियेा निकुंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भई। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सेा वें चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जेा श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानवे वारे भये।

प्रसंग ७

सेा चतुर्भुजदास की वहू एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भुजदास जी कुं सूतक आयेा। सूतक में चतुर्भुजदास जी बन में बैठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगेावर्द्धन नाथ जी विनके चारेा और दूर दूर खेले करते। जब श्रीगेावर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जेा चतुर्भुजदास तुम दूसरेा विवाह करेा। जब चतुर्भुजदास नें कही जेा जात में कन्या नहीं मिले है जब

श्रीनाथ जी ने कही जो तुम धरेजा करौ। जब चतुर्भुजदास जो ने धरेजा कस्यो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भुजदास जी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते।

प्रसंग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्रीगिरिधर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कुं मथुरा में अपने घर पधरावें तौ ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फागनवदी षष्ठी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कुं मथुरा पधराए। और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घर में हतो सो सर्वस्व अर्पण करयो। और बेटी जी ने एक बीटी धर राखी हती। बेटी जी बालक हते जासूं समझते नहीं हते। सो बिटी हूँ श्रीनाथ जी ने माँग लीनी। कारण जो श्रीगिरधर जी नें सर्वस्व अर्पण करवे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य करिवे के लिये श्रीनाथ जी ने बीटी माँग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके विरद के पद और हिलग के पद गायो करते। और श्रीनाथ जी नित्य विनकुं संध्या समें गायन के संग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख सुदि त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद संध्या समें गायो। "श्रीगोवर्द्धन वासी साँवरेलाल तुम बिन रह्यो न जाय हो।" या पद की ऐली तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब करुणा व्याकुल भये और मन में ये विचार करयो जो सर्वथा काल इहाँ

पधारूँगो जासूं भक्त को दुःसह दुःख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जब रात्र एक प्रहर रही तब श्रीनाथ जी ने वैशाख सुदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कुं आज्ञा करी जो आज गोवर्द्धन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगंगो जब श्रीगिरिधर जी नें मंगला करायके श्रीनाथ जी कुं पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय कें मंदिर खासा करायो और श्रीनाथ जी कुं पधारते अवार होय गई। जासूं राजभोग तथा शयनभोग एक समय में आरोगे। वा दिनकूं आज दिन पर्यंत नृसिंघ चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हैं। एक तो नित्य के समें और एक शयन-भोग के संग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन विना श्रीनाथ जी सों रह्यो न गयो।

प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के संग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और बाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुम्भनदास नें पूंछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तब विननें कही श्रीगोकुल गयो हतो।

जब कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी सों पूछ्यो जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला में कितनो भेद है। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सब एक समान है।

कुम्भनदास जी कूं किशोर लीला में बहोत आसक्ती है जासूं ऐसे बोले भगवल्लीला में भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर जी विरुद्ध धर्म आश्रय हें। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी बहोत प्रसन्न भए। वे चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसूं श्रीगुसाईं जी कछु गुप्त नहीं राखते हते।

प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के बेटा राघोदास हते। सो विनकूं भगवल्लीला को अनुभव भयो जब राघोदास जी ने धमार गाई। सो धमार। "ए चल जाएँ जहाँ हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई तब राघोदास की देह छूटी। सो भगवल्लीला में प्रवेश भयो। राघोदास जी की बेटी ने डेढ तुक धर के धमार पूर करी। वे चतुर्भुजदास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र हते। ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस ग्रंथ के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। 'चौरासी वार्ता में ऐसे उल्लेख नहीं मिलते।

श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

—:०:—

प्रसंग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा में रहते हते। और मथुरा जी में पाँच चौबे बडा गुंडा हते। और ठगाई करते और छीत चौबे बिन पाँचन में मुख्य हतो। सो विनने विचार करयो जो कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के बस होय जाय है। जासूं ऐसो दीसे है जो श्रीविट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने हैं। परन्तु हमारे ऊपर चले तब साँची मानें। ये विचार पाँचो चौबेन नें करयो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लैके पाँचो चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तो बाहेर बैठ रहे और मुख्य जो छीत चौबे हतो विनकुं भीतर पठायो। सो वे छीत चोबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धरयो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवास सूं आज्ञा करी जो या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरी निकसी। तब छीत स्वामी देखिके मन में विचारी जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी नें कही जो महाराज मोकुं शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी नें छीत स्वामी कुं नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कुं गये।

भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी बिराजे और बाहेर आयके देखे तो बिराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जो श्रीगुसाईं जी की ईश्वरता जीव सों जानी नहीं जाय है।

जब वे चार चोवे बाहर बैठे हते विनने छीत स्वामी कुं बुलाये। तब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जो तुमारे संगी बाहेर तुमकुं बुलावत हे सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें बाहर आयके चारों चौवान से कही मोकुं टोना लग गयो हे तुम भाग जावो। नहिं तो तुमको लग जायगो। ये सुनके चारों चौवे भाग गये। छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरिधर सों पहेचान।
कपट रूप कुलवे आयो पुरुषोत्तम नहि जान ॥१॥
छोटो बड़ो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामि देखत अपनायो श्रीविट्ठल कृपानिधान ॥२॥

ये पद सुनके श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी कुं साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। और भगवल्लीला को अनुभव भयो और श्रीगुसाईं जी तथा श्रीठाकुर जी के स्वरूप में अभेद निश्चय भयो, दोनों स्वरूप एक हैं ऐसे जानन लगे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कुं गये। उहाँ श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब बाहेर निकसवे

पूँछी जेा श्रीगुसाईं जी कब पधारचे है। तब उहाँ के लोगन नें कही जेा श्रीगुसाईं जी तेा गेाकुल विराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगेाकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय कियेा जेा श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसाईं जी एक ही स्वरूप है। जब सूं छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" एंसी छाप के बहुत पद गाए। सेा वें छीत स्वामी ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग २

सेा वे छीत स्वामी बीरबल के पुरेाहित हते। सेा वे बीरबल के पास वसींधी लेवे कूं गए। तब सवार के समें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे वसुदेव लिये पूरण तप, सेाई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बेाले जेा मैं तेा वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तेा तुम कहा जबाब देओगे वे तेा म्लेच्छ है। तब छीत स्वामी बेाले जेा देशाधिपति पूछेंगे तेा मै नीके जबाब देउँगेा और मेरे मनसूं तेा तूही म्लेच्छ है। आज पीछे तेरेा मुख न देखूंगेां ऐसे कहेके छीतस्वामी स्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपती नें सुनी तब बीरबल सूं पूँछी जेा तुमारे पुरेाहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लेाग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपती नें कही जेा तुम और हम नाव में बेठे हते जब

दीक्षित जी नें मोकूं आशीर्वाद दियो हतो। तब मैंनें मणी भेट करी हती। वे मणी कैसी हती जो पाँच तोला सोना नित्य देती हती। सो वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में पटक दीनी। जब मेरे मन में बड़ो गुस्सा लग्यो तब मैंनें मणी पाछी माँगी। तब दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी में सूं खैांच भरिके मणी काढ़ी तब हमकूं कही तुमारी होय सो पहिचान लेओ। जब हमकूं ये निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वर है, ईश्वर विना ऐसो कारज नहीं होयगो। ये बात विचार करतें तुमारे पुरोहित की सब बात साची है सो तुमनें क्यों विचार न करी। ये बात सुनके बीरबल बहोत खिसातो भयो। और कछू बोल्यो नहीं।

और ये बात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तब लाहोर के वैष्णव आये हते विनसों आज्ञा करी जो छीत स्वामी की खबर राखते रहियौ। जब छीत स्वामी बोले जो मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करवेकूं लियौ नहीं है। मेरो तो विश्रांत घाट है सो आपकी कृपा सों सब चलेगो। ये बात सुनके श्रीगुसाईं जी बहोत प्रसन्न भये।

प्रसंग ३

और एक दिन बीरबल देशाधिपती सों रजा लेके श्रीगोकुल में जन्माष्टमी के दर्शकूं आयो। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपती हूँ छाने छाने आयो। तब जन्माष्टमी के पालना के दर्शन करे मनुष्यन की भीड़ में। तब देशाधिपती कुं श्रीगुसाईं जी विना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तब छीत स्वामी कीर्तन करते हते

और श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी कुं पालना झुलावते हते। तब क्षीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावे हो।
कबहुँक आप संग मिल झूलें कबहुक उतर झुलावे हो ॥ १ ॥
कबहुँक सुरंग खिलोना लें लें नाना भाँति खिलावे हो।
चकई फिरकनी ले विंगीटु झुणझुण हात बजावें हो ॥ २ ॥
भोजन करन थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावें हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावें हो ॥ ३ ॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
क्षीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाएं हो ॥ ४ ॥

ऐसे दर्शन क्षीत स्वामी कुं भए। और देशाधिपतीकुं हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए। तब देशाधिपतीकुं महाप्रसाद दिवाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरबल हूँ आए। तब देशाधिपती नें बीरबल सूं पूछी जो कहा दर्शन किये। तब बीरबल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तब देशाधिपती नें कही ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकुं ऐसे दर्शन भए हैं। और क्षीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मैं तेरे पास ठाड़ो हते। तब बीरबल नें कही मोकुं ऐसे दर्शन क्यूं नहीं भये। तब

देशाधिपती नें कही तुमकुं गुरू के स्वरूप को ज्ञान नहीं है और तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकुं इन बात को अनुभव है ऐसेन सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकुं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें। सो वे छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण। वैष्णव ॥ २॥

श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

—: o :—

प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आंतरी गाम में रहते। तहाँ गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीतो सेा रहते। जेा श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति कैसें होय याही बात की तलासी करत रहते हते।

एम समय गोविंददास आंतरी गांम ते ब्रज कों आये। और महावन में आयके रहे। काहे तें जेा यह ब्रजधाम है। इहाँ भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हते। सेा आप पद करते। सेा जेा कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगें आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सेा गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जेा तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होत हैं। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐसेा विचार कियेा जेा श्रीगुसाईं जी कूं मिलें तेा ठीक।

तब एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महाबन गयेा हतेा। सेा भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयेा। वा वैष्णव की गोविंद स्वामी की आपस में

बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही कें श्रीठाकुर जी को अनुभव कैसे होय। जो मोकुं बहुत दिन सों या बात की आतुरता है तातें कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी की आतुरता देखिके कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कुं श्रीविट्ठल नाथ श्रीगुसाईं जी नें वसकर राखें हें। तातें श्रीठाकुर जी और ठौर कहुँ जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ हें। सो यह सुनके गोविंद स्वामी कुं अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कही। जो मोकुं श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहाँ से उठे सो श्रीगोकुल में आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर संध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कुं श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन में समझें ये कर्म मार्गीय दीखत हैं। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कुं देखके श्रीगुसाईं जी बोले जो आवो गोविंद स्वामी बहुत दिन सूं देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभु अब ही आयो हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की आपने मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये। यामें कछु कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मंदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनति करी हे महाप्रभु मोकूं कृपा करिके शरण लेओ। तब श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये। तब

श्रीनवनीत प्रिया जी के संनिधि में नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कुं साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावण्य के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी। जो आपनो कपट रूप दिखावत हो। साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैसेन कुं मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो कांटन की बार है। तासूं कर्म मार्ग की बार बिना भक्ति मार्ग जो फूल को वृक्ष वाको रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये।

प्रसंग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहते हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और उहां श्रीठाकुर जी सुनवेकुं पधारते हते। जब उहाँ मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिवेकुं आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकुं गोविंदस्वामी नें कही। इहाँ ताँई आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा दीखे हैं। आपकुं गान को अभ्यास है। यातें आपकुं कछु गायो चहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।

जब मदनगोपालदास कायथ बोले। जो इहाँ कोई आदमी तो दिसे नहीं है। तुम कौनसूं बात करत हो। तब गोविंदस्वामी कछु बोले नहीं। बात गुप्त राखी। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जी नें पूँछी जो श्रीठाकुर जी कैसे गावें हैं। तब गोविंदस्वामी नें कही श्रीठाकुर जी बहोत आछे गावें हैं। परंतु ताल स्वर श्रीस्वामिनी जी बहोत आछो देत हैं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के चुप होय रहे।

प्रसंग ३

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सो उहाँ आंतरिगाम में पहले गोविंदस्वामी के सेवक हते सो श्रीगोकुल आये। सो पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूँछी जो गोविंदस्वामी कहा हैं। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर गये। तब तिनमें सूं एक पहेचानतो हतो। जब वानें कही आप क्यों हमारी हाँसी करो हो। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स्वामीपनो छोड़ दियो। जासुं तुम ऐसे समझो जो मर गये हैं। जब विननें बीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय। जब गोविंद स्वामी नें विनकुं ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये। सो गोविंदस्वामी के संग सो विनकुं भगवत्प्राप्ती भई। जिनके संग ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै सब होवै। विनिकी बात कहा कहिये।

प्रसंग ४

सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीयमुना जी

में पाँव नहिं देते । श्रीयमुना जी कुं साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धी के दाता जानते । जैसेा स्वरूप श्रीमहाप्रभू जी नें यमुनाष्टक में वर्णन कियो है । वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हुते जासुं श्रीयमुना जी में पाँव नहीं धरते हुते । और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दंडवत करते, और पान करते ।

सेा एक दिन श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंद-स्वामीकुं पकड़ के श्रीयमुना जी में नहायवे लगे । जब गोविंद-स्वामी नें बीनती करी जेा ये मल मूत्र को भरयो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है । श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं । जासूं ये अधम देह स्पर्श करवे योग्य नहीं है । श्रीयमुना जी कुं तेा उत्तम सामग्री चहिये । ये सुनके श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे । सेा वे गोविंदस्वामी ऐसेा स्वरूप श्रीयमुना-जी केा जानत हुते ।

प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवनं नयनेा सदार
वेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सुसख्यः ।
अस्पंदनं गतिमतां पुलकस्तरूणां
नियेागपाश कृत लक्षणयोर्विचित्रं ॥

या श्लेाक केा व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहवे लगे । जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी पेाढे । गोविंदस्वामी घरकूं चले । तब श्रीबालकृष्ण जी तथा

श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जी तीनो भाई वैष्णवन के मंडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दंडवत करी। तब श्रीगोकुल नाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाईं जी के इहाँ कहा प्रसंग चलतो। हतो। जब गोविंद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी जी को प्रसंग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्याख्यान वे आप ही करें तब होय। जब ऐसे कह्यो तब श्रीगोकुलनाथ जी नें दोनौ भाइन सों कही जो गोविंद स्वामी नें श्रीगुसाईं जी को स्वरूप कैसो जान्यो है। और इनके ऊपर आपनें कैसी कृपा करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्रीगोकुल नाथ जी चुप होय रहे॥

प्रसंग ६

सो गोविंद स्वामी श्रीनाथ जी के संग खेलते हते। सो एक दिन अपछरा कुण्ड सों गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के संग गोविंददास आवते हते। उहाँ से राजभोग की आरती भई ऐसी आवाज सुनी। जब गोविंद स्वामी नें कहि श्रीनाथ जी तो अबी आवत हैं। राजभोग कौन नें अरोगे हैं। गोविंद स्वामी नें जायके श्रीगुसाईं जी सों बीनती करी। जब श्रीगुसाईं नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

और गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सो बीनती करी। जो एक दिन पूंछरी की औरतें गोविंददास श्रीनाथ जी के

संग आवते मैंने देखे हते। जब श्रीगुसाईं जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा है। सो इनकुं अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन में कहेवे लगे। जो हम भितरिया भये तो कहा भयो। सो ये गोविंद स्वामी ऐसे भगवदीय कृपा-पात्र हते।

प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समें श्रीनाथ जी के दर्शन कुं गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कही के पाग के पेच क्यौ खोल डारे हें। जब श्रीनाथ जी नें कही तूं पाग के पेंच संवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच संवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सों कही जो गोविंददास नें अप-रस छिवाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के संग सदैव खेलें हैं। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी को शृङ्गार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कुं आठ कांकरी मारी। जब गोविंदस्वामी नें

एक कांकरी मारी। तब श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसाईं जी नें कही गोविंददास यह कहा कियो। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आठ घखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुपकरि रहे। सो गोविंददास जी कुं ऐसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो।

प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सुं बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सुं एक दिन तो बोलो। तब विननें कही जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछु दिन रहिके बेटी देसकुं जावे लगी। जब बहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई। तब गोविंद स्वामी के मन में दया आई। जो गुरु के घर को अनप्रसादी लेवेगी तो याको बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लियें बोले जो तूं ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो। जब बेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकुं तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तब वे सब कपडा पाछें पठाय दिये। बेटी अपनें घर कों गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अंग सेा ऐसे डरपत हते।

प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सेा सेन भोग सरायकें श्रीगुसाईं जी बीडी अरु गावत हते। तब गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

सो धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे बिना गोविंद स्वामी चुप कर रहै। जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करो। तब गोविंद स्वामी नें कही महाराज धमार तौ भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो बंद भयो अब कहा गावूं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे बैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की वा धमार में धरी। वा दिन सूं गोविंद स्वामी की धमार लोक में साढ़े बारह कही जाय है। सो गोविंद स्वामी ऐंसे कृपापात्र हते। जो लीला के दर्शन करिकें गान करते हते॥

प्रसंग ११

सो वे गोविंद स्वामी महाबन के टेकरा पर नित्य गान करते हते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कुं पधारते हते। और श्रीनाथ जी संग गानहूँ करते हते। और वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला में अष्ट सखान में हते। सो कोई समें श्रीनाथ जी चूकते सो गोविंद स्वामी भूल काढते। और गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते। जो श्रीगुसाईं जी भोजन करवें कुं पधारें तब मोकुं बुलाय लीजो।

एक दिन वा मनुष्य के मन में ऐंसी आई। जो श्रीगोकुल नाथ जी नित्य श्रीगुसाईं जी सों छाने पधारते है। एक दिन जो मैं

न बोलाओं तो गुसांई जी सब जान जाएंगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तो नित्य जाते बंद होय जाएंगे। ये समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयो। जब श्रीगुसांई जी भोजन को पधारवे लगे। तब सब लोग जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसांई जी नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जो गोविंद स्वामी के पास वल्लभ जी बैठे हैं तिनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसांई जी तो सब जानते हैं मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सों कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। जो तिनके संग श्रीनाथ जी तुरा लगा आयके बिराजते हते।

प्रसंग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कुं खबर न हती। जब एक दिन एक ब्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछी जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे ये टूक संभार के घर राखियो काल तेरे घर कुं आयके ले जाऊँगो। वे ब्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कुं पाग बाधवे की ऐसी चतुराई हती।

प्रसंग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय बैठते। सो उहां एक दिन एक बैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

हतो। जब गोविंद स्वामी नें कही जो तुं मत गावै या गायिवे सों कहा होत है। तब वा वैरागी नें कही मैं तो मेरे राम कों रिझावत हौं। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तो चतुर शिरोमणी है सो कैसे रीझेंगे। जो तेरो साचो भाव होय तो मन में नाम लिये सो रीझेंगे। सो वे गोविंद ऐसे निःशंक हते।

प्रसंग १४

सो एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके बिराजते हते और मुरली बजावत हते, और गोविंददास दूर सों टेकरा के ऊपर बैठे देखते हते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय कें उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पें सुं देखे और उतावल सों कूदे और वागा को दांवन फट गयो और लीर झाड पें रहि गई। तब श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो वागा को दांवन फट्यो है। जब मनुष्यन सों पूछी जो इहाँ कोई आयो तो नहीं हतो। तब सबनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तब गोविंददास नें कही जो आप या बात को विचार कहा करे हें। लरिका को सुभाव जाने नहीं हे। जो बहुत चंचल है स्याम ढाक पें सूं कूदि कें वागा को दांमन फाड्यो है। सो आप चलो तो दिखाऊँ ऐसे लीर लटक रही है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। तब श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों पूछी जो आपने उतावल काहें कों करी। तब श्रीनाथ जी

जी नें कही जो उत्थापन को समय भयेा हतो। और आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई। या दिन तें ऐसौ बंदो-वस्त कस्यौ जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शंखनाद करि के और बीस पल रहिके मंदिर के किंवार खोल के उत्थापन करनें। सेा वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

प्रसंग १५

एक दिन आगरे में अकबर पातशाह नें सुन्येा जो गोविंद स्वामी बहुत आछे गावत हें और निरपेक्ष हें और निःशंक हें। जब इनके मुख को राग कैसे सुन्येा जाय। ये विचार करिके पात-शाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए। जब गोविंददास जसेादा घाट पर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाह नें याहवा वाहवा करी। जब गोविंददास नें कही ये राग छी गयेा। जब वानें कही जो में पातशाह हूँ। जब विनने कही जो तुम पात-शाह हो तो पातशाही करेा। परन्तु ये राग तेा तुमारे सुनबे सूं छिवाय गयेा। जब पातशाह नें विचार कस्यो एक देस को मैं राजा हूँ और इनको तेा त्रिलोकी को वैभव फीकेा लगे है। जासूं ये काहे कूं आपने हुकुम में रहेंगे। ये विचारिकै पातशाह चले गये। और गोविंद स्वामी नें वा दिन सूं भैरव राग गायेा नहीं। वे गोविंद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते।

प्रसंग १६

और वे गोविंद स्वामी के संग श्रीनाथ जी नित्य वन में

खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकुं घोडो कर्‍या हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याईं लघुशंका करी। ये बातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सों जाय के कही। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते है सो हाथी घोडा को स्वांग पूरो न करें तो कैसे होवे। और इन बातन में तुम मत पडो। ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी में केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को वागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सों पूँछो जो नीके तो हो। सो सुनकें केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न बोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मांदो मनुष्य को पोसाक पहेर्‍यो है जब कैसे न पूँछो जाय। ये सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहे।

प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राजभोग आवते हते। तब भीतरिया सों गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

मोकूं प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कूं पुकार करि। जब श्रीगुसाईं जी ने गोविंददास सें पूछी यह कहा। जब गोविंद स्वामी ने कही जो आप संग में मोकुं खेलवे कूं ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकूं रहि जाऊँ तो वन में पाछे मोकुं श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी नें ऐसी बंदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविंददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसी भंडारी सो आज्ञा करि। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिन बिना श्रीनाथ जी रहि नहीं सके॥

प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी संग खेलते हते। तब श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तब उत्थापन को समय भयो। तब श्रीनाथ जी भाग के मंदिर में घुस गये। तब मंदिर में भीतर जायकें श्रीनाथ जी कुं गाली मारि। तब सेवक टइलवान नें गोविंददास कुं धक्का मार के बहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धरयो। तब गोविंद स्वामी जाय के रास्ता में बठे और कहे जो अबि गायन के संग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याको मार देउंगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मंदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तब श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सें पूछे जो कैसे हो। तब

श्रीनाथ जी नें कहि जो जहाँ सुधि गोविंददास कुं नहिं मनावोगे तहाँ सुधि मोकु कछू आवेगो नहीं, काहे ते मोकुं रस्ता चले विना और वाके संग खेले विना सरेगो नहिं। अबि रस्ता में जाउं तो आनगिनतोन कि मार देवगो। या विता के लिये मोकुं कछू भावे नहिं है। गोविंददास आवेगो जब कछु भावगो।

ये बात सुनके और श्रीनाथ जी को भक्त वत्सलता देखके श्रीगुसाईं जी को हृदय भर आयो। तब गोविंददास कुं बुलाय के और मनायके श्रीनाथ जी सुं बोनति करि जो ये हाजिर है अब आय गये है। तब श्रीनाथ जी आरोगे। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते। प्रसंग १६ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

———

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.

	Rs.	a.	p.
Shabdarth Parijata.—Containing Hindi Words with their Meanings in Hindi. By Chaturvedi Dwarka Prasad Sharma. 727 pages. Double Crown 8vo. *4th Edition*	3	0	0
The Student's Practical Dictionary of Idioms.—Containing Phrases and Terms with Explanations in English and Roman-Urdu, and Sentences to illustrate them from standard authors. Double Crown 16mo, 619 pages. Cloth bound ...	2	8	0
The Anglo-Hindi School Dictionary.—Containing English Words with their Meanings in Hindi. Double Crown 16mo., 387 pages. With 350 Illustrations. *4th Edition*	1	0	0
The Pocket Diamond Dictionary.—Containing English Words with Hindustani Meanings, in Roman character. 128 pages. Double Foolscap 16mo. *5th Edition*	0	5	0
The Anglo-Urdu School Dictionary.—Containing English Words with their Meanings in Urdu. Double Crown 16mo., 499 pages. Illustrated. *2nd Edition*	1	0	0
The New Century English-Urdu (Roman) Dictionary.—Pronouncing and Literary, containing Copious Vocabulary, with numerous Idiotisms, Phrases, and Literary Illustrations. Compiled by R. R. Whyte. Demy 8vo., 957 pages ...	3	0	0
Gutka Hindi Kosh.—A New and Thoroughly Up-to-date Hindi to Hindi Dictionary. Clear and Neat type. Size $3\frac{1}{2}$" by 5 inches. 1,279 pages. *4th Edition*. Cloth bound	1	8	0
The Concise Dictionary of Persian and Arabic Words.—With their Meanings and Explanations in Urdu, for use in schools. Crown 8vo., 526 pages. Limp cover	0	10	0

	Rs.	a.	p.
Yugal Kosh—Containing Sanskrit Words with their Meanings in Sanskrit and Hindi and sentences to illustrate them from standard authors. Double Crown 8vo., 493 pages	4	0	0
Sanskrit Shabdarth Kaustubh.—A standard Dictionary of Sanskrit Words with their Meanings in Hindi, with four very useful appendices, Crown 8vo., pages 984+130. Cloth bound ...	6	0	0
Persian Gem Dictionary.—(Pocket Edition) Containing Persian Words with their Meanings in Urdu, for the use of students and general readers. Size 5″× 3¼″. Handsomely bound in cloth. 480 pages. *2nd Edition*	0	10	0
The Student's Desk Dictionary.—(Pocket Edition) Containing English Words with English and Hindustani Meanings in Roman character. Size 5″× 3¼″. Printed neatly and handsomely bound. *The cheapest and smallest dictionary ever published in India*	0	10	0
The Student's Home Dictionary.—Containing English Words with their English and Urdu Meanings. Pocket Edition, size 3½″× 5″. 747 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth...	1	0	0
The Student's Home Dictionary.—Containing Urdu Words with their Meanings in English. Pocket Edition, size 3½″× 5″. 825 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth ...	1	0	0
The Student's Home Dictionary.—Containing English Words with their English and Hindi Meanings. Pocket Edition, 3½″× 5″. 808 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth,	1	0	0
The Student's Home Dictionary.—Containing Hindi Words with their Meanings in English. Pocket Edition, 3½″× 5″, 837 pages, nicely printed and handsomely bound in cloth ...	1	0	0

PUBLISHER AND BOOKSELLER, ALLAHABAD

Printed by RAMZAN ALI SHAH at the National Press, Allahabad.